मौलाना क़ारी ह़कीम
मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान क़ादरी रज़वी जमदा शाही बस्ती
यू पी 272002 मोबाइल नम्बर 7415066579 7275912387
जामा मस्जिद दमुआ छिन्दवाड़ा मध्य प्रदेश

गुलशने अक़्वाल

(1)आखिरत में किसी अ़मल के क़बूल हाने के लिए ज़रुरी है कि वह अ़मल ईमान के साथ किया जाए।

(2) अपनी ज़बान से वही बात कहो जो तुम्हारे दिल में है अल्लाह हर चीज़ को जानता है।
(3) जो शख्स कल अपनी मौत का दिन समझता है उसे मौत आने से कोई तक्लीफ नहीं होती ।
(4) जब मुसलमान का दिल अल्लाह के डर से कांपता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे दरख्तों के पत्ते।
(5) इन्सान गुनाह करने की वजह से जहन्नम में नहीं जाता बल्कि गुनाह पर मुतमईन रहने और तौबा न करने की वजह से जहन्नम में जाता है।
(6) बेशक सदक़ा के ज़रिया से अल्लाह उमर बढ़ा देता है और बुरी मौत को दफा फरमाता है।
(7) आप के लिए जो लोग काम करते हैं उन के साथ हमेशा एह़सान करो और उन के साथ अच्छे से रहो।
(8) खाने को ठन्डा कर लिया करो कि गरम खाने में बरकत नहीं।
(8) सच बोलना नेकी है और नेकी जन्नत में ले जाती है,झूट बोलना फिस्क़ व फुजर है और फिस्क़ फुजूर दोज़ख़ में ले जाती है ।
(9) जो शख्स नरमी से मह़रुम कर दिया गयाा वह भलाई से महरुम कर दिया गया।
(10) जो खाने के बाद बरतन को चाट लेगा वह बरतन उस के लिए इस्तेग़फार करेगा।
(11) खाओ और पियो और सदक़ा करो और पहनो जब तक असराफ (फुजूल ख़र्ची) और तकब्बुर की आमीज़श (मिलावट) न हो ।
(12) खाने से पहले और बाद में वज़ू करना मोहताजी को दूर करता है और यह अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की सुन्नतों में से एक पाकीज़ा सुन्नत है।

(13) दो चीज़े मुनाफिक़ में नहीं होतीं। नेक एख़लाक़ और दीन की सही समझ।
(14) इनसान ज़बान के परदे में छिपा है।
(15) हमेशा सच बोलो ताकि तुम्हें क़सम खाने की ज़रुरत न पड़े।
(16) जो शख्स झूट बोलता है तो रहमत का फरिश्ता उस से एक मील दूर चला जाता है।
(17) वह शख्स कैसे तकब्बुर कर सकता है,जो मिटटी से बना हो, मिटटी में मिलने वाला हो और मिटटी में कीड़े मकोड़ों की ग़िज़ा बन ने वाला हो।
(18) तुम में बेहतरीन शख्स वह है जो खुद कुरआन की तअ़लीम हासिल करे और दूसरों को कुरआन की तालीम दे।
(19) खामोशी हर मुसीबत का इलाज है लेकिन ज़ुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाना बेहतरीन अ़मल है।
(20) अ़क़्ल मन्द अपने आप को पस्त कर के बुलन्दी हासिल करता है और नादान अपने आप को बढ़ा कर ज़िल्लत उठाता है।
(21) मुहताज और मिस्कीन की परवरिश करने वाला अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले की तरह़ है।
(22) दुनिया की हर चीज़ की हिफाज़त करनी पड़ती है मगर इल्म एक ऐसी चीज़ है कि वह तुम्हारी हिफाज़त करता है।
(23) आपस में मुसाफह़ा करो दिल कर कीना जाता रहेगा,तोहफा दिया लिया करो मुहब्बत पैदा होगी अ़दावत निकल जाएगी।
(24) बेशक दिलों में बुरे ख्यालात आते हैं मगर अ़क़्ल व दानिश और अल्लाह का फज़्ल व करम इनसान को उन से दूर रखते हैं।

(25) जिस चीज़ को ज़ियादा पीने से नशा पैदा होता है उसे थोड़ा पीना भी हराम है।
(26) जिसे यह पसन्द हो कि अल्लाह तआ़ला तंग दस्ती के वक़्त उस की दुआ़ क़बूल करे तो वह खुशहाली में दुआ़ की कसरत करे।
(27) खड़े हो कर हागिज़ कोई पानी न पिये और जो भूल कर ऐसा कर गुज़रे तो वह क़ै कर दे ।
(28) जिस के सीने में कुछ कुरआन नहीं वह वीराने मकान के मानिन्द है।
(29) दुनिया का ग़म दिल में तारीकी लाता है और आखिरत की फिकर दिल में नूर पैदा करती है।
(30) दुनिया में इ़ज़्ज़त का सबब माल है और आखिरत में इ़ज़्ज़त का मदार अ़अमाल पर है।
(31) औ़रत का घर से बाहर जाना शौहर को पसन्द नहीं तो आस्मान के सारे फरिश्ते उस पर लअ़नत भेजते हैं।
(32) जो शख्स पहले सलाम करता है वह तकब्बुर करता है।
(33) जो क़ब्र में बग़ैर अअ़माले ख़ैर के गया वह समन्दर में बग़ैर कशती के गया।
(34) झूठे होने के लिए यही काफी है कि सुनी सुनाई बातें लोगों से कहता फिरे।
(35) ह़लाल कामों में सब से ना पसन्दीदा काम त़िलाक़ का काम है।
(36) ग़ीबत यह है कि तू अपने भाई का उस चीज़ के साथ जिकर करे जो उसे बुरी लगे।
(37) जो मुसीबत अल्लाह से दूर कर दे वह सज़ा और जो क़रीब कर दे वह आज़माईश है।
(38) तकब्बर करने वाले का सर हमेशा नीचा रहता है।

(39) जब किसी को जमाही आए तो अपना हाथ मुंह पर रख ले कि शैत़ान मुंह में घुस जाता है।
(40) रिशवत इन्साफ को,तौबा गुनाह को,ग़ीबत अअ़माल को,नेकी बदी को, गुस्सा अ़क़ल को,और सदक़ा बला को खाजाती है।
(41) अगर तुम ने अल्लाह व रसूल की अताअ़त से मुंह फेरा तो तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है।
(42) ज़िकरे इलाही के लिए लम्बी उमर पाना खुशकिस्मती है।
(43) हर इल्म के साथ अ़मल चाहिए कि बे अ़मल आ़लिम बे जान जिस्म के मानिन्द है।
(44) जन्नत दो क़दम पर है पहला क़दम नफ्स पर रख और दूसरा क़दम जन्नत में होगा ।
(45) जहालत जैसी कोई गुरबत नहीं।
(46) गुस्से के वक़्त अ़क़ल की पहचान होती है।
(47) नेक गुमान रखना इबादते ह़सना में से है।
(48) इल्म माल से बेहतर है क्योंकि माल फिरऔ़न और क़ारुन की मीरास है और इल्म अम्बिया की ।।
(49) ह़राम कमाई के माल से सदक़ा देना पाक कपड़ों को पेशाब से धोने के बराबर है।
(50) जिस त़रह़ बग़ैर सब्र के जिस्म बेकार है इसी त़रह़ बग़ैर सब्र के ईमान ।
(51) और जब किसी से कोई बुरी बात सुनो तो उस से कनारा कर लो।
(52) बद बख़्ती यह है कि गुनाह करते रहें और मक़बूल बारगाह होने की उम्मीद भी रखें।
(53) अगर मालदार बनना चाहेते हो तो ज़रुरत से ज़ियादा तलब न करो यही सब से उ़म्दा दौलत है।

(54) अदब का ज़रियह अपनी इज़्ज़त और इल्म के ज़रियह अपने दीन की हिफाज़त करो।
(55) अल्लाह से हर ह़ाल में डरते रहो बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से आगाह और बा ख़बर है ।
(56) तुम्हारी जैसी निय्यत होगी वैसा ही तुम को फल मिलेगा ।
(57) ह़या (शर्म) और कम बोलना ईमान की शाखें हैं दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की जड़ है।
(58) सच्चा ताजिर ईमानदारों,सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ जन्नत में रहेगा।
(59) जब कोई क़ब्र के पास से गुज़रने वाला सलाम करता है तब अहले क़ब्र सुन कर जवाब देते हैं।
(60) अ़मल स्वालेह़ (नेक अ़मल) वह है जिस पर लोगों से तअ़रीफ की उम्मीद न की जाये।
(61) यक़ीन ही पूरा ईमान है तो दीन की तमाम बातों में यक़ीन की किफायत पैदा करो।
(62) अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स को उस की त़ाक़त से ज़्यादा तक्लीफ नहीं देता।
(63) जो ईमान लायें और नेक काम करें वह जन्नत के मालिक होंगे।
(64) अगर रिज़्क़ अ़क़ल व दानिश से मिलता तो उजड और बे वक़ूफ लोग ज़िन्दा ही न रहते ।
(65) ख़ैरात को न रोको वरना तुम्हारा रिज़्क़ भी रोक दिया जायेगा।
(66) बेशक अल्लाह इतराने वालों और बुराई करने वालों को पसन्द नहीं करता ।
(67) टखनों से नीचे जो हिस्सा तहबन्द का है वह जहन्नम में है।

(68) दिल का सुकून सिर्फ और सिर्फ सच्चाई से मिलता है।
(69) मुनाफिक़ की चार निशानियां हैं। 1: वअ़दा खिलाफी 2: अमानत में ख़यानत 3: गाली देना 4: झूठ बोलना ।
(70) खाओ उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी और शैत़ान के क़दमों पर न चलो।
(71) और अपने रब को अपने दिल में अ़जिज़ी और पोशीदगी से याद करो।
(72) ग़ाफिलों में ज़िकरे खुदा करने वाले की मिसाल सूखे पौदे में सब्ज़ घास की त़रह़ है।
(73) वह शख्स जिस के दिल में बुराई है वह भलाईन पायेगा और जिस की ज़बान में नुक्ताचीनी है वह कभी आज़रद न होगा।
(74) जो शख्स हर जाने अनजाने से दोस्ती रखता है वह महफूज़ नहीं रह सकता।
(75) अपने भाई को देख कर मुसकरा देना भी सदक़ा है।
(76) हज़रत उमर फारुक़ रदियल्लाहु तअ़ाला अ़न्ह की दुअ़ा: खुदा उस शख्स पर रह़मत नाज़िल करे जो मेरे अ़ैबों से मुझे खबरदार करता है।
(77) तुम्हें जो मुसीबत पहोंची उस सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाई।
(78) अ़ौरत की बे परदगी मर्द की बेह़याई का सबूत है।
(79) बे पर्दा अ़ौरत अल्लाह के नज़दीक कोई इज़्ज़त नहीं रखती ।।
(80) झूठे की सब से बड़ी सज़ा यह है कि लोग उस के सच का भी एतिबार नहीं करते।
(81) जाहिलों की सोहबत से परहेज़ करो ऐसा न हो कि वह तुम्हें भी अपने जैसा बना लें।

(82) ख़ुशी इन्सान को इतना नहीं सिखाती जितना कि ग़म सिखाता है।
(83) हुस्ने एख़लाक़ मोमिन का ज़ेवर है और हुसने निय्यत अअ़माले ह़स्ना की असास है जिस ने इन दोनों को पालिया वह कामयाब है।
(84) अच्छे मुन्तज़िम में तीन खूबियां ज़रुरी हैं, तह़म्मुल, तदब्बुर,और हुस्ने तकल्लुम।
(85) शरीअ़त पर इस्तेक़ामत और मअ़सियत (गुनाह) पर नदामत मोमिन का असली जौहर है।
(86) ख़िदमते ख़ल्क़ अ़क़ल मन्दी है, ग़फ्लत शर्मिन्दगी है।
(87) बुज़रुगों का अदब ज़िन्दगी का सुरुर और ईमान का नूर है।
(88) इन्सान की अच्छाई का मदार माल व दौलत और अ़ैश व इशरत पर नहीं बल्कि दिल की सच्चाई,ज़ेहन की सफाई,और किरदार की अच्छाई पर है।
(89) भूखे मुसलमान को खाना खिलाना रहमत को अपने उपर वाजिब करने वाले अअ़माल में से है।
(90) जिस मुआ़शेरे में नेक निय्यती व रोशन ख़्याली और हुस्ने अ़मल की तवानाई की नूरानी फज़ा छाई हुई होगी उसी को अच्छा मुआ़शेरा कहा जायेगा।
(91) मुत्तक़ी और परहेज़गार अल्लाह व रसूल के क़रीबी हैं।
(92) लोगों को ऐसे मुआ़फ करो जैसे तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो कि वह तुम को मुआ़फ करेगा।
(93) वह शख्स जन्नत में न जायेगा जिस का पड़ोसी उस के तक्लीफ देने से मह़फूज़ न हो।
(93) जिस त़रह बदन की बक़ा और उस की तवानाई व त़ाक़त के लिए उस को खिलाया पिलाया जाता है, उस के राह़त व आराम का भर पूर ख़्याल रखा जाता है और उस के दुख दर्द

को दूर करने की फिकर की जाती है इसी तरह आप को अपनी रुह की भी हिफाज़त करनी है,तरीक़त का सिलसिला दर असल रुहानी तरबियत और रुह की ताक़त व कुव्वत की हिफाज़त व बालीदगी का एक पाकीज़ा व मुक़द्दस सिलसिला है।

(94) इल्म इनसान का जौहरे अव्वल है,इस लिए रोटी बोटी कपड़ा, मकान से पहले इल्म की दौलत से नवाज़ा गया, क्यों कि फज़ीलत का मदारे अव्वल इल्म और सिर्फ इल्म है ख्वाह अव्वलीन का इल्म हो या आखिरीन का इल्म।

(95) सच्चाई एक एसी दवा दवा है जिस की लज़्ज़त कड़वी मगर तासीर मीठी है।

(96) जिन के पास इल्म नाफेअ़ है वही अल्लाह से डरते हैं।

(97) अगर तुम्हें एक दूसरे की निय्यतों का इल्म होता तो तुम एक दूसरे को दफन भी न करते।

(98) जो रुसवाई और बदनामी से लज़्ज़त हासिल करे वह शख्स किस तरह नसीहत से हिदायत हासिल कर सकता है।

(99) हर एक चीज़ के लिए सफाई की चीज़ होती है, दिल की सफाई की चीज़ अल्लाह का ज़िक्र है।

(100) जिसे कोई ईज़ा और तक्लीफ न पहोंचे उस में कोई खूबी नहीं।

(101) जो शख्स अल्लाह और क़्यामत पर ईमान रखता है उस के लिए लाज़िम है कि मेहमान की इज़्ज़त करे।
इबादत एक तिजारत है जिस की दुकान, तन्हाई माल, परहेज़गारी और नफअ़, जन्नत है,

(102) रया कारी और दिखावा सवाब को ग़ारत कर देते हैं।

(103) अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और आपस में न झगड़ो कि बिखर कर कमज़ोर हो जाओगे।

(104) दुनिया का अ़ज़ाब यह है कि तेरा दिल मुर्दा हो जाए।

(105) आदमी के छुपे हुए दुशमन बहुत हैं, समझ दार आदमी वह है जो दुशमनों के मकरो फरेब से बचने की कोशिश करता है।
(106) लोगों के दिलों का ज़ंग तीन चीज़ों से साफ हो जाता है
(1) तिलावते कुरआन की कसरत, (2) ज़िकरे इलाही की कसरत, (3) मौत के ज़िक्र की कसरत।
(107) तमाम गुनाहों की असल तीन चीज़ें हैं।(1) हिर्स(2) ह़सद(3) तकब्बुर।
(108) हिर्स , ह़सद, और तकब्बुर से यह छ बुराईयां पैदा होती हैं (1) पेट भर कर खाना(2) नींद बहोत करना (3) दुनिवायी आसाईश से उल्फत(4) हुब्बे माल (5) हुसूले मनसब की लालच (6) हुब्बे हुकूमत।
(109) खुशियां बांटने ही से सच्ची खुशी हासिल होती है।
(110) ज़रुरियाते ज़िन्दगी को मह़दूद रखोगे तो हमेशा खुश व खुर्रम रहोगे।
(111) पड़ोसी की खुशी और उसकी ज़रुरियात का ख़्याल रखना सवाबे अ़ज़ीम है।
(112) इन्सानों में सब से अफ्ज़ल (अच्छा) इन्सान वह है जिस के अख़लाक़ अच्छे है।
(113) ह़ासिद को कभी खुशी और बद खुल्क़ को कभी सरदारी नहीं मिलती है।
(114) ऐसे शख्स से दोस्ती करो जो नेकी कर के भूल जाये।
(115) अपनी जवानी के धोखे में मत आओ कि अ़न्क़रीब हम से ले ली जायेगी।
(116) गुनहगार जब तौबा के लिए अल्लाह को पुकारता है तो उस से प्यारी कोई आवाज़ नहीं होती।

(117) अगर दुनिया अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मच्छर के एक पर के बराबर भी कोई हैसियत रखती है तो इस में से काफिर को एक घूंट भी न मिलता।
(118) हज़रत अ़ली रदियल्लाहु अ़न्ह कहते हैंः मुझे जन्नत से ज़्यादा मस्जिद में बैठना अच्छा लगता है क्योंकि जन्नत में मेरा नफ्स खुश होगा,जब कि मस्जिद में मेरा रब खुश होगा।
(119) बेनमाज़ी को क़र्ज़ न दो क्यों कि जो अल्लाह का क़र्ज़ अदा नहीं करता वह तुम्हारा कैसे करेगा।
(120) अगर अल्लाह से बात करना चाहते हो तो नमाज़ पढ़ो और अगर चाहते हो कि अल्लाह तुम से बात तो क़ुरआन पढ़ो।
(121) जिस ने आराम पसन्द किया वह जल्द ही तबाह हआ।
(122) तीन रिश्ते तीन वक़्तों में पहचाने जाते हैं। (1) औलाद– बुढ़ापे में (2) दोस्त– मुसीबत में, (3) बीवी– गुरबत में।
(123) जो ह़लाल खाये,सुन्नत पर चले,लोग उस की शरारतों से बे खौफ हो जायें तो वह जन्नत में दाखिल होगा।
(124) ह़राम चीज़ों से बचने वाला सब से बड़ा इबादत गुज़ार है।
(125) दो अ़क्ल मन्दों में कीना और झगड़ा नहीं होता है और न ही कोई किसी से बे वक़ूफ से उलझता है।
(126) जिस ने एक बालिश्त ज़मीन ज़ुल्म के तौर पर ले ली क़्यामत के दिन सातों ज़मीनों से इतना ही हिस्सा त़ौक़ बना कर उस के गले में डाला जायेगा।
(127) जिस ने अपनी मां के पैर चूमा गोया उस ने जन्नत की चौखट को बोसा दिया।
(128) ह़िजाब (नक़ाब) उक औरत की अ़ज़मत को इस त़रह़ बढ़ाता है जिस त़रह़ ग़िलाफ कअ़बे की शान को दो बाला करता है।

(129) तवक्कल एक ऐसी शै है जिस में सिवाए अच्छाई के बुराई का पहलू नहीं होता।
रिशवत इन्साफ को, तौबा गुनाह को, ग़ीबत अ़मल को, नेकी बदी को, झूठ रिज़्क़ को और सदक़ा बला को खा जाता है।
(130) खुदा के दुशमनों के साथ मुहब्बत करना खुदा से दुशमनी रखने के बराबर है।
(131) इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम एक ऐसी दौलत है जिस से ईमान को ताज़गी मिलती है।
(132) दरुद शरीफ का विर्द मोमिन के गुनाहों को इस त़रह़ मिटाता है कि इतनी तेज़ी से पानी भी आग को नहीं बुझाता।
(133) मतलबी दोस्त कोइले की त़रह़ होता है, जब कोईला गरम होता है तो हाथ जलादेता है और जब ठन्डा होता है तो काला कर देता है।
(134) मुह़ताज और मिस्कीन की परवरिश करने वाला अल्लाह की राह़ में जिहाद करने वाले की त़रह़ है।
(135) दुनिया में नेक काम कर के मर जाना आबे ह़यात पीने से बेहतर है,दुनिया की मुहब्बत अंधेरा है, और जिस का चिराग़ परहेज़गारी है।
(136) ग़ीबत की वजह से चेहरे की नूरानियत और रोज़ी की बरकत चली जाती है।
(137) हर वह दिन हमारे लिए ईद का दिन है जिस दिन हम अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी न करें।
(138) क्यामत के दिन तीन आदमी अर्श के साये में होंगे (1) मां बाप की खिदमत करने वाला (2) वक़्त पर नमाज़ पढ़ने वाला (3) रमज़ान के रोज़े रखने वाला ।
(139) ज़मीर साफ हो तो ग़ैर मुम्किन है कि किसी के आइनए क़ल्ब पर गुबार (धूल) आए।

(140) दिल व दिमाग़ को खुदा के लिए सर्फ (ख़र्च) करना ही ज़िन्दगी की बेहतरीन सूरत है।

(141) फक़ीर की शान यह है कि खुदा दे तो दूसरे ह़ाजत मन्दों में तक़्सीम कर दे और ख़ुदा न दे तो शुक्र अदा कर।

(142) अगर दानिस्ता किसी क़िस्म का गुनाह करो तो खुदा की ज़मीन छोड़ कर करो।

(143) वह शख्स जन्नती है जिस ने अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करली।

(144) कम बोलने में हिक्मत, कम खाने में सेह़त, और लोगों से कम मिलने जुलने में आ़फियत है।

(145) किसी के लिए यह ज़ेबा नहीं देता कि वह हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे और दुआ़ कर के कि अल्लाह उसे रिज़्क़ दे, अल्लाह आस्मान से दौलत की बारिश नहीं करता ।

(146) ईमान के बाद नेक बख़्त बीवी भी एक बहुत बड़ी नेअ़मत है।

(147) जो तुझे तेरे अ़ैब से आगाह करे समझ ले वह तेरा सच्चा दोस्त है।

(148) वह बात जो तू दुशमन को भी नहीं कहता, दोस्त से भी पोशीदा रख कि उस में भलाई है।

(149) अगर कोई काम किसी के ज़िम्मे करना है तो अ़क़्ल मन्द के सुपुर्द कर,अगर अक़्ल मन्द न मिले तो खुद कर वरना छोड़ दे।

(150) दुनिया के थोड़े माल पर राज़ी रह,जितना रिज़्क़ मुक़द्दर में है उसी पर क़नाअ़त कर दूसरों की रोज़ी पर आंख मत डाल ताकि रंज व ग़म और नफ्स की शरारात से महफूज़ रहे।

(151) खामोशी को अपनी आ़दत बना ताकि ज़बान के शर (नुक़सानात) से महफूज़ रहे।

(152) दुनिया में हर आदमी सच्चा दोस्त तिलाश करता है लेकिन खुद सच्चा दोस्त बन ना गवारा नहीं करता।
(153) दुनिया की मुहब्बत दिल से बाहर रहे तो बेहतर है वरना यह तबाह कर देती है।
(154) यादे इलाही तमाम बलाओं से निजात दिला देती है।
(155) दुनया गन्दगी का ढेर और कुत्तों के जमा होने की जगह है और वह शख्स कुत्तों से भी कमतर है जो दुनया के माल पर जम कर बैठ जाए ।
(156) अपने आप को मसरुफ रखो,वरना ग़म और मायूसी तुम्हें फना कर देगी।
(157) अपने घर की बातें बाहर के लोगों को न बताओ तुम्हारी ग़ैर मौजूदगी में लोग तुम्हारा मज़ाक़ उड़ायेंगे।
(158) नसीहत एक सच्चाई और खुशामद एक धोखा है।
(159) दुरुस्त बात को दुरुस्त समझते हुए उस पर अ़मल न करना बदतरीन क़िस्म की एख़लाक़ी बुज़्दिली है।।
खुदा की खुशनूदी हासिल करो,ताकि तुम्हारे लिए खुश नूदी के वसाएल कुशादह हो जायें।
(160) अहले दर्द की बातें सुनो ताकि तुम्हें भी दर्दे दिल मयस्सर आए।
(161) खाने के लिए ज़िन्दा न रहो बल्कि ज़िन्दा रहने के लिए खाओ।
(162) हर नाकामी के दामन में कामयाबी के फूल होते हैं, मगर शर्त यह है कि हम कांटों में उलझ कर न रह जायें।
(163) वह घर जिस में किताबें न हों वह उस जिस्म की मानिन्द है जिस में रुह़ न हो।
(164) अअ़ला ज़र्फ इन्सान की पहचान यह हैं कि वह दुशमन के साथ भी अच्छा बरताव करे।

(165) इख़्तियार, ताक़त और दौलत ऐसी चीज़ें हैं जिन के मिलने से लोग बदलते नहीं बल्कि बे नक़ाब हो जाते हैं।
(166) दोज़ख़ से दूर न भागो बल्कि ऐसे काम करो कि दोज़ख तुम से दूर भाग जाये।
(167) अ़ज़ाबे क़ब्र पेशाब के छींटों से न बचने पर होता है।
(168) ह़सद करने वाले के लिए यही काफी है कि जब तुम खुश होते हो तो वह उदास हो जाता है।
(169) मोमिन हमेशा मुआ़फ करने के लिए मवाक़ेअ़ ढोंडता है जब कि मुनाफिक़ हमेशा अ़ैब ढूंडता है।
(170) जो दुनिया में हंसते हंसते गुनाह करेगा वह दोज़ख में रोते रोते चला जायेगा।
(171) जो अपने अअ़्माल का चर्चा करेगा तो अल्लाह उस की रया कारी को मशहूर कर देगा और उसे ज़लील व रुसवा कर देगा।
(172) हर बात में तक़्वा और अमानत को पेशे नज़र रखो।
(173) अपनी औलाद की तकरीम करो और उन्हें ह़ुस्ने अख़लाक़ से आरास्ता करो।
(174) जब तुम किसी को अपना दोस्त बनाओ तो अपने दिल में एक क़ब्रस्तान बनालो जहां तुम उस की बुराईयां दफन कर सको।
(175) मुसलमान को नमाज़ के मसाइल बताना रुए ज़मीन की तमाम दौलत सदक़ा करने से अफ्ज़ल है।
(176) वालिदैन को परेशान करना और रुलाना गुनाहे कबीरह है।
(177) ज़बान की तेज़ी उस मां पर न आज़माओ जिस ने तुम्हें बोलना सिखाया।
(178) खामोशी गुस्से का बेहतरीन इलाज है।

(179) सब से वज़नी चीज़ जो मोमिन की मीज़ान पर रखी जायेगी वह उस का हुस्ने एख़लाक़ है।
(180) दिन को रिज़्क़ तिलाश करो और रात को उसे तिलाश करो जो तुम्हें रिज़्क़ देता है।
(181) साथ बैठ कर खाना खाओ अलग अलग न खाओ क्योंकि जमाअ़त में बरकत है।
(182) जो गुस्से को पी जाते हैं और लोगों को मुआ़फ कर देते हैं वह लोग अल्लाह को बहुत पसन्द हैं।
(183) अच्छा दोस्त हासिल करने के लिए खुद अच्छा दोस्त बनो।
(184) हक़ीक़ी लुत्फ दूसरों की दिलजूई से है वह ज़ाती मफाद में हरगिज़ नहीं।
(185) जिस्म ज़ाहिरी की कसाफत इल्म के नूर से ही साफ होती है, और बातिनी कसाफत इल्म पर अ़मल करने से साफ होती है।
(186) दूसरों के उयूब पोशीदा रखोगे तो खुदा तुम्हारे उयूब भी छुपाएगा ।
(187) मुस्कराहट एक ऐसा तोहफा है जो देने वाले को मुफ्लिस किए बग़ैर पाने वाले को भी बहुत कुछ देती है।
(188) मेह़नत रिज़्क़ ह़लाल कमाने का बेहतरीन ज़रियह है।
(189) मेह़नत इन्सान को खुद एतेमादी और कुव्वते इरादी सिखाती है।
(190) अल्लाह उस शख्स से खुश होता है जो मेह़नत से रोज़ी कमाता है।
(191) सच्ची तौबा करने वाले का एक आंसू दोज़ख की आग को बुझाने की त़ाक़त रखता है।
(192) वह आंसू बड़ा क़ीमती है जो खुदा के हुजूर गुनाहों की मआ़फी के लिए बहे।

(193) नसीह़त सुनो और सुन कर आगे किसी और को सुना दो ताकि उस से नसीह़त का ह़क़ अदा हो जाये।
(194) सिर्फ खामोशी के मफहूम को न समझो बल्कि कब खामोशी कब इख्तियार करना चाहिए यह भी समझो।
(195) अगर तुम चाहो तो अपने ख्यालात बदल कर अपनी ज़िन्दगी बदल सकते हो।
(196) बुरे अअ़माल से ज़्यादा बुरे बुरे ख़्यालात हैं कि पहले ख़्यालात पैदा होते है फिर अअ़माल।
(197) दोस्त की कामयाबी पर मग़मूम होना इतना दुशवार नहीं, जितना उस की कामयाबी पर मसरुर होना मुश्किल है।
(198) अ़क़ल मन्द उस वक़्त तक कुछ नहीं बोलता जब तक सब खामोश नहीं हो जाते।
(199) मुसीबत को पसन्द रखना जवां मर्दी है।
(200) अच्छी किताबों का मुत़ालअ़ा उदासी और ग़म का बेहतरीन इलाज है।
(201) बुरी किताबों का मुत़ालअ़ा रुह़ को मार डालता है।
(202) भूक और मिस्कीनी में ज़िन्दगी गुज़ारना किसी कमीने के सामने दस्ते सवाल करने से बेहतर है।
(203) खुदा के दोस्तों की अन्धेरी रात भी रोज़े रोशन की चमकती है।
(204) सब से बड़ी फतेह अपने आप को फतह़ करना है।
(205) मुआ़शेरे में रहने वाले हर शख्स से उस की अहलियत, सलाहियत और त़ाक़त के मुत़ाबिक़ काम लिया
जाये ताकि हर शख्स को खुशियां नसीब हो और खुशहाली क़ायम रहे।
(206) इन्सान की फितरत उस के छोटे छोटे कामों से मअ़लूम होती है कि वह बड़े काम बड़ी सोच समझ कर
करता है।

(207) हर शख़्स कुछ न कुछ अ़क़्ल व फरासत रखता है जबकि उस का इस्तेमाल बहुत कम लोग करते हैं।
(208) जिस शख़्स का ग़ौर व फिकर बढ़ जाता है उसे इल्म अ़ता होता है और जिसे इल्म मिलता है उसे चाहिए कि अ़मल भी करे।
(209) नेकियों पर ग़ौर व फिकर नेकियों की तरग़ीब देता है और गुनाहों पर पशेमानी (शर्मिन्दगी) गुनाह छोड़ने पर आमादह करती है।
(210) वह दिल जिस में अल्लाह का डर नहीं वह वीरान क़ब्रस्तान के मानिन्द है ।
(211) इन्सान के गुनाहगार होने के इतना ही लिए काफी है कि जब उसे गुनाहों से बचने के लिए कहा जाए तो वह कह दे कि तुम अपना ख्याल करो।
(212) अपने जिस्म को मअ़मूली गुज़र बसर पर क़नाअ़त करने वाला बनाओ वरना यह तुम से अपनी ज़रुरत से ज़्यादा माल व दौलत मांगेगा।
(213) सुख और मुसर्रत ऐसे अ़त्र हैं जिन्हें जितना ज़्यादा दूसरों पर छिड़केंगे इतनी ही ज़्यादा खुशबू तुम्हारे अन्दर आएगी।
(214) अ़क़्ल की ह़द हो सकती है लेकिन बे अ़क़्ल की कोई ह़द नहीं।
(215) ज़िन्दगी की मुसीबतें कम करना चाहते हो तो ज़्यादा से ज़्यादा मसरुफ रहो।
(216) रोज़ी बढ़ने की दुआ़ न मांगो बल्कि रिज़्क़ में बरकत की दुआ़ मांगो।
(217) इन्सान के अन्दर इतनी अ़क़्ल होना ज़रुरी है कि वह सआ़दत व शक़ावत और हिदायत व ज़लालत का फर्क़ समझ सके।

(218) इन्सान अपने एहसासात को किसी न किसी के नाम करना चाहता है किया ही अच्छा हो कि वह उसे अल्लाह के नाम करदे।
(219) वह इल्म बेकार है जो इन्सान को काम करना सिखादे लेकिन ज़िन्दगी गुज़ारना न सिखाए ।
(220) जो लोग अपने फैसले बदलते रहते हैं वह ज़िन्दगी में कभी कामयाब नहीं होते ।
(221) नाम के लिए काम नहीं करना चाहिए काम करोगे तो नाम हो ही जाएगा।
(222) इन्सानों की बे ग़र्ज़ खिदमत करना इन्सानियत की मेअ़राज है।
(223) बदगुमानी तमाम फायदों को ख़तम कर देती है।
(224) अपने काम ह़सीन अन्दाज़ में करो कि अल्लाह तआ़ला अच्छे काम करने वालों को पसन्द करता है।
(225) क़ाबिलियत और कामयाबी सिक्के के दो रुख हैं इस लिए कामयाबी के पीछे न दौड़ो क़ाबिल बनो कामयाबी तुम्हारे पीछे दौड़ेगी।
(226) जिस ने किसी बद मज़हब (देव बन्दी, क़ादियानी,राफिज़ी,वग़ैरह) की तअ़ज़ीम की तो उस ने इस्लाम को ढाने में मदद की।
(227) ईमान और शराब की आ़दत दोनों एक मर्द के सीने में जमा नहीं हो सकते।
(228) तअ़ज्जुब है उस शख्स पर जो दुनया को फानी जानता है और उस की रग़बत भी रखता है।
(229) तुम में अच्छा वह है जिस से भलाई की उम्मीद हो और उस की शरारत से लोग महफ़ूज़ हों।
(230) खाना खा कर अल्लाह का शुकर अदा करने वाला ऐसा है जैसे रोज़ा रख कर सब्र करने वाला।

(231) जब तीन शख्स साथ में बैठते हैं तो दो शख्स कान में बात न करें उस से तीसरे को तक्लीफ होगी।
(232) अल्लाह को राज़ी करो उस के अह्काम पर अ़मल कर के,रसूल को राज़ी करो उन की अ़ताअ़त से और मख़्लूक़ को राज़ी करो उन के हुकूक़ अदा करो।
(233) जो शख्स तुम्हारी निगाहों से तुम्हारी ज़रुरत को समझ नहीं सकता है उसे कुछ कह कर खुद को शर्मिन्दा न करो।
(234) अगर तुम मौत की रफ्तार को देख लेते तो यक़ीनन तुम उम्मीदों और उमंगों से नफ्रत करते और हरगिज़ उन में मग़रुर न होते।
(235) ऐ लोगो ! तुम किस दुनया पर फख्र करते हो ? जहां बेहतरीन मशरुब मक्खी का थूक (शहद) और बेहतरीन कपड़ा कीड़े का थूक (रेशम) है।
(236) जन्नत में मोमिन का ज़ेवर वहां तक होगा जहां तक वज़ू का पानी पहोंचता है।
(237) तुम में से जब कोई जनाज़ा देखे और उस के साथ न जा सके तो उस वक़्त तक खड़ा रहे जब तक वह आगे न बढ़ जाए ।
(238) अ़क़्ल मन्द वह है जो गुनाहों से नफरत करने वाला और परहेज़गार है।
(239) दुआ़ मोमिन का हथियार है, दीन का सुतून है और ज़मीन व आस्मान का नूर है।
(240) तुम मरीज़ के पास जाओ तो उस से अपने लिए दुआ़ कराओ बेशक उन की दुआ़ फरिशतों की दुआ़ जैसी है।
(241) गाने से दिल में निफाक़ पैदा होता है जिस तरह़ पानी से खेती उगती है।
(242) जो अ़ैब से आगाह करे वह दोस्त और जो मुंह पर तअ़रीफ के पुल बांधे वह दुशमन है।

(243) अपनी हिफाज़त अल्लाह के नाम करो वह तुम्हें शिकस्त और वबाओं से महफूज़ रखेगा ।
(244) बे शक शैतान तुहारा खुला दुशमन है सो तुम भी उसे अपना दुशमन जानो।
(245) वह लोग जो मुसलमानों में बरे रस्म व रिवाज को आ़म करते हैं। उन के दर्दनाक अज़ाब है।
(246) जब कोई अल्लाह की नेअ़मत पर अल्ह़मदुलिल्लाह कहता है तो अल्लाह उस को उस से भी अफज़ल नेअ़मत से नवाज़ता है।
(247) बन्दा जब मां बाप के लिए दुआ़ करना छोड़ देता है तो उस का रिज़्क़ क़तअ़ करदिया जाता है।
(248) क़र्ज़ लेने से बचने की कोशिश करो क्यों कि मोमिन की रुह़ क़र्ज़ की वजह से मुअ़ल्लक़ रहती है।
(249) चार चीज़ें सब ही नबिय्यों की सुन्नत हैं (1) निकाह़ (2) ह़या (3) मिस्वाक और (4) खुशबू लगाना।
(250) अपनी जान, औलाद,खादिमों और माल पर बद दुआ़ न किया करो कि क्या पता क़बूलियत का वक़्त हो।
(251) मोमिन की ज़िल्लत अपने मज़हब से गाफिल हो जाने में है न कि ग़रीब और मुफ्लिस होने में ।
(252) कनजूस आदमी दुनया में फक़ीरों की त़रह ज़िन्दगी गुज़ारेगा लेकिन आखिरत में अमीरों की त़रह़ हिसाब देगा।
(253) जिस ने किसी मुसीबत ज़दह की तअ़ज़ियत की उस को भी उतना ही अजर मिलेगा जितना कि मुसीबतज़दह को ।
(254) तंग लिबास उस हिस्से पर पहनना जिस को शरीअ़त ने छुपाना का हुक्म दिया है सख़्त मना और नुक़सान दह भी है।
(255) किसी चीज़ की खरीदी के लिए गया ईसार ज़ब्त़ कर लेना ह़राम है।

(256) अल्लाह के नज़दीक बन्दे की यह ह़ालत सब से ज़्यादा पसन्द है कि वह उस को सजदह करते हुए देखे ।
(257) उस शख़्स पर लअ़नत है जो किसी मुसलमान को नुक़सान पहोंचाए या उसे धोखा दे।
(258) शरीफ आदमी तरक़्क़ी पाकर नरम हो जाता है और कमीने का मुआ़मिला उस से उलट है।
(259) मुनाफिक़ से सांप की दोस्ती अच्छी कि सांप काटेगा तो जान जायेगी और मुनाफिक़ काटेगा तो ईमान जायेगा।
(260) नुक्ता चीनी करने वाला त़रह़ त़रह़ की आफात में मुब्तला कर दिया जाता है।
(261) किसी भी नेकी को मअ़मली न समझो ख़्वाह यही हो कि तुम अपने मुसलमान भाई से खुशी खुशी मिलो।
(262) तीन चीज़ों को मअ़मूली दर्जे की न समझो। (1) क़र्ज़ (2) फर्ज़ (3) मर्ज़।
(263) जिस ने मोमिन को दुनया की किसी सख़्त मुसीबत से निकाला,तो अल्लाह तआ़ला उसे क़्यामत के दिन हौलनाक मुसीबत से निकालेगा।
(264) अगर इन्सानों के दिलों को शैतान ने घेरा तो वह अल्लाह तआ़ला की बादशाही की त़रफ देखे।
(265)दुनया की मुहब्बत सब गुनाहों की सरदार है और उस की मुहब्बत तुम्हें अन्धा और गूंगा कर देती है।
(266) इत्मीनाने क़ल्ब चाहेते हो तो ह़सद से दूर रहो।
(267) जिस ने आराम को पसन्द किया वह जल्द तबाह हुआ।
(268) बेहतरीन अ़मल दूसरों को कुछ देना है,सुन्नत की पैरवी करना बिदअ़त से बचना है।
(269) चार रह़मतें ऐसी हैं जो इनसान से बरदाश्त नहीं होती (1)बेटी (2)मेहमान (3) बारिश (4)बीमारी

(270) लोगों के ख़ौफ से ह़क़ बात कहने से न रुको क्यों कि न तो कोई मौत को क़रीब कर सकते हैं न कोई रिज़्क़ को दूर कर सकते हैं।
(271) जब कोई चीज़ अपने वालिदैन को दो तो इस त़रह़ दो,जिस त़रह़ कोई गुलाम अपने आक़ा के सामने पेश करता है।
(272) जिस का राब्ता अल्लाह के साथ हो वह नाकाम नहीं होता है नाकाम वह होता है जिस की उम्मीद दुनया से वाबस्ता हो।
(273) जब तुम को कोई दुआ़ दे तो उस से बेह़तर कलमा से दुआ़ दो या उन्हीं लफज़ों से दुआ़ दो, बे शक खुदा हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।
(274) जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराईयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा है।
(275) लोग प्यार के लिए होते हैं और चीज़ें इस्तेमाल के लिए, बात तब बिगड़ती है जब चीज़ों से प्यार और लोगों को इस्तेमाल किया जाता है।
(276) तकब्बुर करने वाले से वाले से क़्यामत के दिन न अल्लाह कलाम करेगा न उस की त़रफ नज़रे रह़मत करेगा। उस के लिए दर्द नाक अज़ाब हैं।
(277) जिस त़रह़ जहालत की बात कहने में खूबी नहीं इसी त़रह़ ह़क़ बात में चुप रहने में भलाई नहीं।
(278) मैं उस शख्स को जन्नत में घर दिलवाने की ज़मानत देता हूं जो झगड़ा छोड़ दे चाहे हक़ यह हो।
(279) अल्लाह के खास बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर नरमी से चलें और जब जाहिल उन से जहालत की बात करें तो कहें तुम को सलाम ।
(280) मुसीबत को पोशीदा रखना जवां मर्दी है।

(281) बुरी बात कहने वाले तीन लोगों को ज़खमी करते हैं (1)खुद को (2)जिसकी बुराई की उस को (3)बुरी बात सुनने वाले को।
(282) जिस क़ौम में तीन त़रह के लोग हों वह क़ौम बर्बाद होगी। (1)ज़ालिम हुक्मरां (2)जाहिल दुरवेश (3)बे अ़मल आलिम।
(283) परहेज़गारी इख़्तेयार करो इबादात में इख्लास पैदा होगा।
(284) अल्लाह उस को पसन्द करता है कि तुम अपनी औलाद के दरम्यान इनसाफ करो यहां तक कि बोसा लेने में भी।
(285) हुक्म क्यामत के दिन तारीकियां है यअ़नी हुक्म करने वाला क़्यामत के दिन सख़्त अन्धेरों और मुसीबत में घर होगा।
(286) दो आवाज़ें दुनया व आखिरत में मलउन हैं। (1)नग़मा के वक़्त बाजे (म्यिूज़िक) की आवाज़ (2) मुसीबत और ग़म के वक़्त रोने की आवाज़।
(287) उस शख्स के लिए हलाकत है जो लोगों के हंसाने के लिए झूठ बोलता है।
(288) झूठ से मुंह काला होता है और चुग़ली से क़ब्र का अ़ज़ाब मिलेगा।
(289) जो शख्स दूसरों पर फिस्क़ और कुफर की तोहमत लगाए और वह ऐसा न हो तो उस कहने वाले पर वापस होता है।
(290) जिस ने अपने भाई को ऐसे गुनाह पर शर्मिन्दा किया जिस से वह तौबा कर चुका है तो मरने से पहले वह खुद उस गुनाह में मुब्तला होगा।
(291) जब अल्लाह तअ़ाला किसी बन्दे को बरबाद करना चाहता है तो उस से शर्म व ह़या निकल जाती है और अल्लाह का गुस्सा उस पर मुसल्लत़ हो जाता है।

(292) अक़्ल मन्द इनसान वह है जो अपने हक़ से काम लेने पर राज़ी रहे और दूसरों को उन के हक़ से ज़्यादा देने के लेने तय्यार रहे।
(293) जब तुम किसी साहबे तवाज़ेअ को देखो तो उस के साथ तवाज़ोअ़ से पेश आओ और तकब्बुर करने वाले से तकब्बुर से कि वह ज़लील व ख़्वार हो।
(294) जो बातें ज़्यादा करते हैं उन की ख़तायें ज़्यादा हो जाती हैं जिन की ख़तायें ज़्यादा हो जाती हैं उन की ह़या कम हो जाती हैं जिन की ह़या कम हो जाती है उन की परहेज़गारी कम हो जाती है, जिन की परहेज़गारी क हो जाती है उन का दिल मुर्दा हो जाता है।
(295) पेट (भुख) हाथ की हथकड़ी और पैर की बेड़ी है , पेट का ग़ुलाम खुदा को कम पूजता है।
(296) मोमिन पर तीन एह़सान करो ।(1)नफअ़ नहीं दे सकते तो नुक़सान न करो . (2) ख़ुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा न करो (3) तअ़रीफ नहीं कर सकते तो बुराई न करो।
(297)दुनया और उस की दिल फरेबी पर फरेफ्ता न हो जाओ, इस लिए कि दुनया की खुश नुमाई गन्दगी और दस्त बीनी जुदाई है।
(298) ज़िन्दगी में दो लोगों का बहुत ख़्याल करो। (1) एक वह जिस ने तुम्हारी जीत के लिए बहुत कुछ यारा हो,बाप (2) दूसरे वह जिस ने तुम्हारी हार को जीत में तब्दील किया हो, मां।
(299) लालची एक दुनया हासिल कर के भी भूखा है और क़नाअ़त करने वाला एक रोटी से भरता है।
(300) तेरी तअ़रीफ करने वाले से ग़रुर न ख़रीद क्यों कि उस ने मकर का जाल बिछाया और लालच का दामन पसारा है।।
(301) दुआ़ दरवाज़े पर दस्तक की त़रह़ है,दुआ़ हमेशा मांगता रह क्यों कि बार बार दस्तक से दरवाज़ा खुल ही जाता है।

(302) हक़ परस्त अगरचे कि तअ़दाद में कम होते हैं लेकिन उन की क़द्र व मन्ज़िलत ज़्यादा होती है।
(303) खुदा ने इनसान को अपने लिए पैदा किया इस लिए उसे चाहिए कि वह दूसरों का न बने।
(304) तंगदस्ती पर सब्र करने से खुदा की त़रफ से फराख़ दस्ती हासिल होती है।
(305) अपने आप को दाना समझने वालो! इस बात का भी अन्दाज़ा लगाओ कि तुम ने कितनी नादानियां की हैं।
(306) परहेज़गारी की निशानी यह है कि दूसरों के बारे में ख्याल करे कि वह निजात हासिल कर लेगा और खुद को गुनाहगार तसव्वुर करे।
(307) जिस त़रह़ शबनम के क़तरे मुरझाए हुए फोलों को ताज़गी देते हैं इसी त़रह़ अच्छे अलफाज़ मायूस दिलों को रोशनी अ़त़ा करते हैं।
(308) बह़स व मुबाहेसा हमेशा ख़तरनाक होता है उस से अकसर सर्द मोहरी और ग़लत फहमी बढ़ती है, मुम्किन है कि तुम अपने दोस्त से जीत जाओ मगर साथ ही अपने दोस्त को खो भी दो।
(309) हमेशा उन्हें नज़र अन्दाज़ मत करो जो तुम्हारी परवाह करते हैं वरना एक दिन तुम्हें एहसास होगा कि पत्थर जमा करते करते तुम ने हीरा खोदिया।
(310) ख़िज़ां के गिरते पत्तों को ह़क़ीर मत समझना क्यों कि उन ही पत्तों के गिरने से बहार आती है।
(311) जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से डरता है वह कभी बदला नहीं लेता ।
(312) ह़सद करने वाला मौत से पहले मर जाता है।
(313) मौत को याद करना नफ्स की तमाम बीमारियों की शिफा है।

(314) इस दुनिया में नेक चलनी का रास्ता दूसरी दुनया में निजात का सड़क है।
(315) तालिबे दुनया को दीन का इल्म पढ़ाना राहज़न के हाथ में तलवार देने के मु त रादिफ है।
(316) खुदा की फरमांबरदारी के बग़ैर उस की रह़मत का उम्मीदवार होना जहालत और ह़माक़त है बग़ैर सुन्नते रसूल की पैरवी के शफाअ़त की उम्मीद फरेब है।
(317) बुरी खसलतों में सब से बुरी खसलतें दो हैं। (1) इन्तेहाई कनजूसी (2) इन्तेहाई बुज़दिली
(318) जिस पर नसीहत असर न करे उसे समझ लेना चाहिए कि उस का दिल ईमान से खाली है।
(319) तअ़ज्जुब है उस शख्स पर जो जहन्नम के बारे में जानता है फिर भी गुनाह करता है।
(320) किसी के ईमान का अन्दाज़ा उस के वअ़दों से लगाना ।
(321) अ़क़्ल को जाएल करने वाली शराब से बुरी कोई और चीज़ नहीं।
(322) जब जनाज़ा के हमराह जाओ तो मय्यत के ग़म से ज़्यादा अपना ग़म करो और ख़्याल करो कि वह मलकलमौत का मुंह देख चुका है और मुझे अभी उसे देखना है।
(323) शराब एक ऐसा ज़हर है जिस से पहले एख़लाक़ी और फिर बहुत जल्द जिसमानी मात वाक़ेअ़ हो जाती है।
(324) ज़ाहिद वह है जो दुनया से एहतेराज़ रखे,अपनी क़िस्मत पर रज़ा मन्द रहे, और मिक़दारे अ़मल से ज़्यादा बात न कहे।
(325) रुह़ की पाकीज़गी के लिए ज़बान और दिल का पाकीज़ा होना बहुत ज़रुरी है।
(326) मुख़्लिस दोस्त वही है जो आप के एह़सासात और जज़बात से प्यार करे सुख और दुख में साथ दे।
(327) नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद करो।

(328) दुनया की मुहब्बत से फक़्र व ज़ोहद का नूर दिल से जाता रहता है।
(329) पांव फिसल जाये तो फिसल जाये मगर ज़बान को फिसलने न दो।
(330) ख़्वाहिशात की ताबेअ़दारी एक ला इलाज मर्ज़ है, ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाना एक त़रह़ का जिहाद है।
(331) बे अ़मल आ़लिम,शहद न देने वाली मक्खी की त़रह़ है।
(332) ज़ालिमों को मुऑफ कर देना मज़लूमों पर जुल्म है।
(333) ज़िन्दगी एक शमा की मानिन्द है जो हवा में रखी गई है।
(334) अ़दल व इन्साफ एक ऐसा अ़मल है जिस में बेपनाह खूबियां हैं।
(335) दौलत से आदमी खुशामद तो खरीद सकता है लेकिन मुहब्बत नहीं।
(336) लगन और एतेमाद इन्सान को कामयाबी की त़रफ ले जाते हैं।
(337)जिस गुनाह से क़ब्ल (पहले) इनसान में खौफ पैदा हो वह अगर तौबा कर ले तो उस को अल्लाह तआ़ला का कुर्ब हासिल होता है।
(338) जो शख्स इबादत पर फखर करे वह गुनाहगार है और जो गुनाह पर नदामत का इज़हार करे वह फरमांबरदार है।
(339) मोमिन की तअ़रीफ यह है कि नफ्स की सरकशी का मुक़ाबला करता रहे और आ़रिफ की तअ़रीफ यह है कि वह अपने मौला की त़ाअ़त में हमा तन मशगूल रहे।
(340) साह़बे करामत वह है जो अपनी ज़ात के लिए नफ्स से हर लम्ह़ा जंग करता रहे क्योंकि नफ्स से जंग करना अल्लाह तआ़ला तक रसाई का सबब है।

(341) अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में उस से ज़्यादा पोशीदा है जितना कि रात की तारीकी में सियाह पत्थर पर चींटी रेंगती है।
(342) नेक बख़्ती की अ़लामत यह है कि अ़क़्लमन्द दुशमन से वास्ता पड़ जाये।
(343) पांच लोगों की सोहबत से परहेज़ करना चाहिए (1) झूठे से , क्यों कि उस की कुरबत फरेब में मुब्तला कर देती है। (2) बे वक़्फ से, क्यों कि जिस क़दर वह तुम्हारा फायदा चाहेगा उसी क़दर नुक़सान पहोंचेगा।
(3) कन्जूस से, क्यों कि उस की सोहबत से बेहतरीन वक़्त रायगां हो जाता है (4) बुज़दिल से, क्यों कि यह वक़्त पड़ने पर साथ छोड़ देता है।(5) फासिक़ से, क्यों कि एक निवाले की लालच में कनारा कश हो कर मुसीबत में मुब्तला कर देता है।
(344) जन्नत का ह़क़दार सिर्फ वही है जो अपने तमाम उमूर (काम)अल्लाह तआ़ला को सौंप दे और दोज़ख उस का मुक़द्दर है जो अपने उमूर सरकश नफ्स के ह़वाले कर दे।
(345) तक़्वा दीन की असास है और लालच तक़्वे को ज़ाए कर देती है।
(346) तुम दुनया में डराने वालों की सोहबत इख़्तियार करो, ताकि रोज़े हश्र रहमते खुदा वन्दी तुम्हारे क़रीब तर हो।
(347) दूसरों को नसीह़त उस वक़्त करना चाहिए जब खुद भी तमाम बुराइयों से पाक हो जाए।
(348) तबाही मुर्दा दिली में पोशीदा है और मुर्दा दिल दुनया की मुहब्बत में डूब जाता है।
(349) इन्सान के लिए ज़रुरी है कि वह नाफेअ़ इल्म,अ़मल की दौलत,इख़्लास व क़नाअ़त, और सब्रे जमील हासिल करता रहे। क्यों कि इन चीज़ों से आखिरत में सर खुरुई मिलेगी।

(350) भेड़ बकरियां इन्सानों ज़्यादा बा खबर होती हैं क्यों कि चरवाहे की एक आवाज़ पर चरना छोड़ देती हैं। और इन्सान अपनी ख्वाहिशात की ख़ातिर अहकामे इलाही की भी परवाह नहीं करता और बुरी सोहबत इन्सान को नेक लोगों से दूर कर देती है।

(351)फिकर एक ऐसा आइना है जिस में नेक व बद का मुशाहेदा किया जा सकता है।

(352) मुनाफिक़त जाहिर व बातिन में खुलूसे निय्यत के फिक़दान का नाम है।

(353) तक़वा के तीन मदारिज हैं।(1) गुस्से के आ़लम में भी सच्ची बात कहना (2) उन चीज़ों से बचना जिन से अल्लाह ने इज्तेनाब का हुक्म दिया है। (3) अहकामे इलाही पर राज़ी ब रज़ा रहना।

(354) जिस ने हसद से इज्तनाब किया उस ने मुहब्बत हासिल कर ली , जिस ने सब्र व सुकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी वह सर बुलन्द हो गया।

(355) तीन अफराद की ग़ीबत दुरुस्त है। (1) लालची की (2) फासिक़ की (3) ज़ालिम बादशाह की।

(356) इन्सान को एक ऐसे मकान में भेजा गया है जहां के तमाम हलाल व हराम का मुहासबा किया जायेगा।

(357) जो दुनया से मुहब्बत नहीं करते निजात उन ही का हिस्सा है, जो दुनया के असीर हुए उन्हों ने खुद को हलाकत में डाला।

(358) नफ्स से ज़्यादा दुनया में कोई शै शरकश नहीं और अगर यह तुम यह देखना चाहते हो कि तुम्हारे बाद दुनया की किया कैफियत होगी तो यह देख लो कि दूसरे लोगों के जाने के बाद किया नौअि़यत रही।

(359) जो शख़्स तुम्हारे सामने दूसरों के उ़यूब (अ़ैब की जमा) बयान करता है वह यक़ीनन दूसरों के सामने तुम्हारी बुराई भी करता होगा।
(360) जिस से क़्यामत के दिन फायदा हासिल न हो उस की सोहबत से क्या फायदा ?
(361) अहले दुनया फालूदा की त़रह़ हैं , जो ज़ाहिर में तो खुश रंग होता है मगर बातिन में बदमज़ा होता है।
(362) जो इबादत कम और लग़्व बातें ज़्यादा करता है उस का इल्म थोड़ा,क़ल्ब अन्धा है और उमर राईगां है क्यों कि इखलास से बेहतर कोई अ़मल नहीं।
(363) दुनया में रहते हुए ज़ुहद इख़्तियार करो और ह़िर्स (लालच) व त़मअ़ को तर्क कर दो और पूरी मख़लूक़ को मुहताज तसव्वुर कर के कभी किसी से अपनी हाजत का ज़िकर न करो अगर तुम इन चीज़ों की पाबन्दी करोगे तो बे नियाज़ हो जाओगे।
(364) सीम व ज़र और दिरहम व दीनार पर नज़र डालने से यह चीज़ ज़्यादा दुशवार है कि इन्सान अपनी ज़बान पर निगाह रखे और कभी किसी को बुरा न कहे।
(365) जिस का दिल अल्लाह के डर से लब्रेज़ होता है, उस से दुनया की हर चीज़ खौफ ज़दह रहती है। (366) सिर्फ ज़बानी तौबा करना झूठों का काम है। क्यों कि अगर सच्चे दिल से तौबा की गई तो दोबारा तौबा की ज़रुरत ही पेश नहीं आएगी।
(367) जिस त़रह़ जन्नत में रोना अ़जीब सी बात है इसी त़रह़ दुनया में हंसना भी तअ़ज्जुब अंगेज़ है,क्यों न तो जन्नत रोने की जगह है और न दुनयाा हंसने की जगह है।
(368) तीन चीज़ों का हासिल करना ना मुम्किन है, इस लिए उन की जुस्तजू न करो।(1) ऐसा आ़लिम जो मुकम्मल त़ौर पर अपने इल्म पर अ़मल पैरा हो (2) ऐसा आ़मिल जिस में इख़्लास

भी हो (3) ऐसा भाई जो उ़यूब से पाक हो, क्यों कि जो फर्द अपने भाई का ज़ाहिरी दोस्त और बातिनी दुशमन हो उस पर हमेशा अल्लाह की लअ़नत रहती है।
(369) दो खस्लतें ह़माक़त पर मबनी है। (1)बिला वजह हंसना (2) दिन रात की बेज़ारी से गुरेज़ करना और खुद अ़मल न करते हुए दूसरों को नसीह़त करना ।
(370) जिस को तीन बातों में दिलजमई हासिल न हो तो समझ लो कि उस के उपर बाबे रहमत बन्द हो चुका है।(1) तिलावते कु़रआन मजीद के वक़्त (2) नमाज़ की ह़ालत में (3) ज़िकर व शुग़ल के वक़्त ।
(371) ख़्वाहिशात का बन्दा कभी सच्चा नहीं हो सकता क्यों कि खुदा तआ़ला के साथ इख़्लास का तअ़ल्लुक़ सच्चाई और खुलूस निय्यती से है।
(372) जो दुनयावी इज़्ज़त चाहता है उसे चाहिए कि तीन चीज़ों से कनारा कश हो जाए (1) मख़्लूक़ से इज़हारे हाजत करना (2) दूसरों में अ़ैब निकालना (3) किसी के मेहमान के साथ जाना ।
(373) दुनयावी नाम व नमूद का ख्वाहिश मन्द आख़िरत की लज़्ज़त से महरुम रहता है।
(374) यह तसव्वर करना लोग हमें बेहतर समझें महज़ दुनया की मुहब्बत का मज़हर है जब तक बन्दा अपने नफ्स के सामने फौलादी दीवार न खड़ी कर ले उसे इबादत में लज़्ज़त व ह़लावत नहीं मिल सकती ।
(375) तीन काम बहुत मुश्किल है (1) मुफ्लिसी में सखावत (2) ख़ौफ में सदाक़त (3) ख़लवत में तक़वा।
(376) जो बहुत ज़्यादा खाता है उसे हिक्मत से हिस्सा नहीं मिलता।

(377) गुनाहों से तौबा करने के बाद दोबारा करना दरोग़ गोई है।

(378) सब से बड़ा दौलत मन्द है जो तक़्वा की दौलत से माला माल हो।

(379) हम जन्नत में जाने की तमन्ना तो करते हैं लेकिन जन्नत में ले जाने वाले काम नहीं करते।

(380)मसायब में सब्र करना क़ाबिले तअ़रीफ नहीं बल्कि मसायब पर खुश और शाकिर रहना क़ाबिले तअ़रीफ है।

(381) खुदा से खौफ करने वाले हिदायत पाते हैं और दुरवेशी से डरने वाले क़हरे इलाही में गिरिफ्तार हो जाते हैं।।

(382) इन्सान पर छः चीज़ों की वजह से तबाही आती है (1) अअ़माले सालिहा से कोताही (2) इब्लीस की फरमांबरदारी (3) मौत का वक़्त क़रीब न समझना (4) रज़ाए इलाही को छोड़ कर लोगों की रज़ा मन्दी हासिल करना (5) तक़ाज़ाए नफ्स पर सुन्नत को छोड़ देना (6) बुज़रुगों की ग़ल्ती को सनद बना कर उन के फज़ायल से सर्फे नज़र करना और अपनी ग़लती को उन के सर थोपना।

(383) दोस्त ऐसे बनाओ जो तुम्हारी नाराज़गी से नाराज़ न हों और तुम्हारी ग़ल्तियों को बता कर उन की इस्लाह करें।

(384) जिस पर दुनया का नशा सवार हो तो उसे नसीहत करना बे सूद है।

(385) अहले मअ़रिफत के नज़्दीक इख़्लास के रास्ते की तरफ ले जाने वाली ख़लवत से बेहतर कोई जगह नहीं है।

(386) जिस त़रह़ हर जुर्म की सज़ा होती है इसी त़रह़ ज़िकरे इलाही से ग़फ्लत की सज़ा दुनया की मुहब्बत है।

(387) अल्लाह की मुहब्बत का मफहूम है कि जो चीज़ें उस से दूर करे उन से मुकम्मल कनारा कशी इख्तियार करो।

(388) मरीज़े क़ल्ब की चार अ़लामतें हैं (1) इबादत में लज़्ज़त का फिक़दान (2) खुदा से खौफ ज़दह न होना (3) इल्म की बातें सुनने के बाद उस पर अ़मल न करना (4) दिल और रुह़ की गहराईयों के साथ अल्लाह तअ़ाला का फरमांबरदार बन जाने को बन्दगी कहते हैं।
(389) दिल की तौबा यह है कि ह़राम चीज़ों को छोड़ दे, आंख की तौबा यह है कि हराम चीज़ की जानिब न उठे। कान की तौबा यह है ग़ीबत और बद गोई सुनने की निय्यत भी न करे, हाथ की तौबा यह है कि ग़ैर शरई चीज़ों की त़रफ न उठे, शरम गाह की तौबा यह है कि बदकारी से कनाराकश रहने में।
(390) नदामत का मफहूम यह है कि गुनाह करने के बाद खौफे सज़ा बाक़ी रहे और तक़वा यह है कि अपने ज़ाहिर को गुनाह और नाफरमानी में मुब्तला न करे और अपने बातिन को लग़विय्यात से महफूज़ रखते हुए हूमेशा यह तसव्वुर रखे कि अल्लाह तआला हमारे तमाम अफअ़ाल की निगरानी कर रहा है और हम उस के सामने हैं।
(392) तदब्बुर व तफक्कुर इबादत की चाबी है और ख्वाहिशाते नफ्स की हिफाज़त अल्लाह तअ़ाला के कुर्ब की आइनादार है
(392) इख्लास में जब तक सिदक़ और सब्र की शमूलियत न हो उस वक़्त तक इख्लास मुकम्मल नहीं हो सकता ।
(393) खुदा से खौफ रखने वाला उसी जानिब मुतवज्जेह रहता है और जो उस की जानिब मु त वज्जेह हो जाये उसे निजात हासिल हो गई।
(394) क़नाअ़त पसन्द ,लज़्ज़त व कैफ का सरदार बन जाता है और जो लग़्व कामों में मसरुफ रहता है उसे ज़िल्लत च ख़्वारी मिलती है।

(395) अल्लाह से मुसलसल डरते रहने वाले बन्दे के दिल में अल्लाह की मुहब्बत इस त़रह़ बस जाती है कि उस को अक़्ले कामिल अ़त़ा कर दी जाती है।
(396) जिस का ज़ाहिर, बाति़न का आइनादार न हो उस की सोहबत से परहेज़ करो।
(397) इख़्लास के ज़िकरे इलाही करने वाला अल्लाह के सिवा हर शै को खुद ब खुद भूलता चला जाता है।
(398) खुद को अपने मरतबे के मुत़ाबिक़ ही ज़ाहिर करना चाहिए या जिस क़दर खुद को ज़ाहिर करना है वैसा बनना चाहिए।
(399) भूख एक ऐसा अब्र है जिस से रहमत की बारिश होती रहती है।
(400) जो तकब्बुर की वजह से लोगों रुअ़ब जमाता है वह खुदा से दूर है और जो मख़लूक़ की अज़िय्यत रसानी को बरदाश्त करता है और मख़लूक़ से ख़नदए पेशानी से पेश आता है वह खुदा से क़रीब है।
(401) तुम्हें किसी बुरी आ़दत से वास्ता पड़ जाये तो उस को अच्छी आ़दत में तब्दील करने की कोशिश करो और जब तुम्हें कोई कुछ देना चाहे तो पहले अल्लाह का शुकर अदा करो फिर देने वाले का।
(402) जब तुम मख़लूक़ से कनाराकश हो कर अपने उ़यूब पर नज़र डालने लगो तो समझो कि अल्लाह का कुर्ब हासिल हो सकता है।
(403) तुम इ़ज़्ज़त की इन्तेहा हासिल करने की फिकर में हो जब कि वह बारी तआ़ला की सिफत है जिस को कोई मख़लूक़ हासिल नहीं कर सकती है।
(404) एक दिरहम क़र्ज़ए ह़सना देना एक दिरहम ख़ैरात कर देने से ज़्यादा सवाब है।

(405) अगर साहबे औलाद अपने बच्चों की निगरानी और परवरिश के साथ इल्मे दीन भी सिखाए तो यह जिहाद में शिरकत से अफ्ज़ल है।
(406) जिस को दुनया वाले इज़्ज़त व वक़अ़त की निगाहों से देखते हैं उसे चाहिए कि वह खुद को बे वक़अ़त तसव्वुर करे ताकि खुद फरेबी में मुब्तला न हो।
(407) कुर्बे इलाही और मख़लूक़ से कनारा कशी कर के दिल की बीमारी का इलाज मुम्किन है।
(408) तवाज़ोअ़ का मतलब यह है कि इन्सान अमीरों से गुरुर और फक़ीरों से आ़जिज़ी के साथ पेश आए, और जो दुनयावी एतिबार से तुम से बरतर हों उस के साथ तकब्बुर से पेश आओ और जो तुम से कमतर हो उस के साथ आ़जिज़ी इख्तियार करो।
(409) अगर खुदा के डर से एक आंसू भी निकल पड़े तो वह उमर भर के उस रोने से बेहतर है जिस में खौफे इलाही शामिल न हो , खुदा का खौफ रखने वालों को गुज़र बसर का डर नहीं रहता।
(410) इस पहले कि झगड़ा बढ़ने लगे तुम उस से अलग हो जाओ।
(411) उन लोगों से रश्क व ह़सद मत करो जिन के पास तुम से ज़्यादा इल्म है बल्कि उन पर रहम करो जिन के पास तुम से कम इल्म है।
(412) कोई कमज़ोर शख़्स तुम्हारी बे इज़्ज़ती करे तो तुम उसे बख्श दो कि बहादुरों का काम मुआ़फ कर देना है।
(413) बांटने से खुशी इस तरह बढ़ती है जिस तरह़ ज़मीन में बोया हुआ रबीअ़ फसल बढ़ता है।
(414) ज़्यादा इल्म वालों से इल्म सीखो और कम इल्म वालों को इल्म सिखाओ।

(415) अगर तुमज़ोर को कुछ दे नहीं सकते तो उस के साथ मेहरबानी से पेश आओ।
(416) ग़ीबत सुनने ग़ीबत करने वालों में दाखिल है।
(417) गुनाह पर नदामत गुनाह को मिटा देती है,नेकी में ग़ुरुर नेकी को तबाह कर देता है।
(418) सब से बेहतरीन लुक़्मा वह होता है जो अपनी मेहनत से हासिल किया जाए।
(419) बख़ील से बचो, क्यों कि वह तुम्हारी हाजतों में रुकावट पैदा करता है।
(420) इन्साफ की घड़ी उमर भर की इबादत से बेहतर है।
(421) उस दिन पर आंसू बहाओ जो तुम्हारी उमर से कम हो गया और उस में तुम ने कोई नेकी न की।
(422) मर्ज़ या मुसीबत की वजह से अल्लाह तआ़ला मोमिन के गुनाहों को इस तऱह कम कर देता है जिस तऱह ख़िज़ां में दरख़्तों के पत्ते गिरते हैं।
(423) जिस शख़्स पर नसीहत असर न करे वह जाने कि मेरा दिल ईमान से खाली है।
(424) वह अ़मल जो बग़ैर इल्म के हो,उसे बीमार जोनो और वह इल्म जो बग़ैर अ़मल के हो उसे बेकार जानो।
(425) बद बख़्त वह शख़्स जो मर जाए मगर उस का गुनाह न मरे,यअ़नी वह कोई ऐसा बुरा काम छोड़ जाए जो उस के मरने के बाद भी जारी रहे।
(426) खुश बख़्त वह शख़्स जो मर जाये मगर उस की नेकी न मरे, यअ़नी वह कोई ऐसा नेक काम छोड़ जाए जो उस के मरने के बाद भी जारी रहे।
(427) हक़ीक़ी सख़ावत यह है कि मख़लूक़े खुदा को तक्लीफ से बचाने के लिए खुद तक्लीफ उठा लो।

(428) इबादत एक पेशा है, उस की दूकान ख़लवत, उस में माल तक़्वा,और नफा जन्नत है।
(429) जब तुम सुकून की कमी महसूस करो तो अपने रब के हुज़ूर तौबा करो क्यों कि इन्सान के गुनाह ही हैं जो दिल को बे चैन रखते हैं।
(430) अपने नफ्स को क़ाबू में रखो, उसे मन मानी न करने दो,वरना वह ज़्यादा से ज़्यादा ख़्वाहिशात पैदा करेगा।
(431) जिस में अमानत नहीं उस में ईमान नहीं,ख़्यानत मुनाफिक़ की निशानी है, अमानत ख़तम होना. क़्यामत की निशानी है।
(432) तीन जीज़े अल्लाह को बहुत पसन्द है।(1) सर्दी का वजू (2) गर्मी का रोज़ा (3) जवानी की इबादत।
(433) तुम इन्सान को बुरा न समझो,शाएद वह वेसा न हो जैसा तुम समझते हो,हक़ीक़ी इल्म तो अल्लाह के पास है तुम तो ला इल्म हो।
(434) जो चीज़ें दुनयादारों के नज़दीक पसन्दीदा हैं वह चीज़ें हरगिज़ पसन्दीदगी के क़ाबिल लहीं है।
(435) अल्लाह तअ़ाला उस मोमिन से खुश होता है जो किसी मोमिन की ज़रुरत को पूरा करे, उस का मुक़ाम जन्नत है।
(436) अहले ख़ैर की सोहबत से दिल में भलाई पैदा होती है और अहले शर की सोहबत से दिल को फितना व फसाद की जानिब मायल कर देती है।
(437) खुदा से दूर कर देने वाली अशया से कनाराकशी जुहद है,और जुहद की अ़लामत यह है कि कम क़ीमती अशया के मुक़ाबले में ज़्यादा क़ीमती अशया की तलब न करे ।
(438) दुनयावी उमूर में ग़ौर व फिकर करना आखिरत के लिए हिजाब बन जाता है।

(439) अपनी ज़िन्दगी फुजूल और बे कार न बसर करो क्यों कि उमर रायगां गुज़रने का ग़म इतना अहम है कि अगर इन्सान उस पर तमाम उमर भी रोता रहे तो कम है।
(440) मोमिन की अ़लामत यह भी है कि वह अपने दिल से दुनया के ग़म खाली कर के इबादते इलाही और खौफे इलाही में रोता रहे।
(441) सिदक़े दिल के साथ नफसानी ख़्वाहिशात को तर्क कर देने वाला अल्लाह तआ़ला के अज्रे अज़ीम का मुस्तहिक़ होता है।
(442) हर शै के लिए एक ज़ेबाईश है और इबादत के लिए ज़ेबाईश खौफे खुदा है।
(443) पेट भर खाने से ख़्वाहिशाते नफसानी उरुज पर पहोंच जाती है और नफ्स अपनी मुरादें मांगने लगता है।
(444) ह़राम रिज़्क़ से दुनया की रग़बत और गुनाहों से मुहब्बत में इज़ाफा होता है।
(445) तक़वा से अफज़ल कोई ज़ादेराह नहीं और सब्र का कोई निअमुल बदल नहीं।
(446) अअ़माले सालिह़ा के बग़ैर जन्नत की तलब, इत्तिबाए सुन्नत के बग़ैर शफाअ़त की उम्मीद और नाफरमानी के बाद रह़मत की तमन्ना हमाक़त है।
(447) जो खुद अपने नफ्स को आरास्ता नहीं कर सकता वह दूसरों के नफ्स की इस्लाह़ कैसे कर सकता है।
(448) उमर की दराज़ी का राज़ सब्र में पोशीदा है, सब्र करने वालों के साथ अल्लाह होता है।
(449) अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा नाम बाक़ी रहे तो अपनी औलाद को अच्छे इख़्लाक़ से आरास्ता करो।

(450) यह सच है कि इन्सान को उस के मुक़द्दर से ज़्यादा रिज़्क़ नहीं मिलता लेकिन तिलाशे रिज़्क़ के लिए सई (कोशिश) करना अच्छी बात है और सुसती करना अच्छी बात नहीं।
(451) दुशमन से हमेशा बचो और दोस्त से उस वक़्त जब वह तुम्हारी तअ़रीफ करने लगे।
(452) अपने दास्त की सच्चाई का इम्तिहान न लो किया पता उस वक़्त वह मजबूर हो और तुम ग़लत़फहमी में एक अच्छा दोस्त खो दो।
(453) निय्यत कितनी भी अच्छी हो दुनया आप को आप के दिखावे से जानती है और दिखावा कितना भी अच्छा हो अल्लाह आप को आप की निय्यत से जानता है।
(454) रिज़्क़ की बहुत ज़्यादा कमी और बहुत ज़्यादा दोनों ही बुराई की त़रफ ले जाती है।
(455) दुनयादारी अल्लाह की याद से ग़ाफिल और दीन से दूरी है।
(456) मुख़्लिस वह है जो अपनी नेकियों को इस त़रह़ छुपाए जैसे बुराइयों को छुपाता है। ज
(457) जब तुम्हारे दिल में किसी के लिए नफरत पैदा होने लगे तो तुम उस की अच्दाइयों को देखने लगो।
(458) खुशनसीब शख़्स वह नहीं, जिस का नसीब अच्छा नहीं, बल्कि खुश नसीब वह है जो अपने नसीब पर खुश हो।
(459) सिर्फ इतना सोए कि ग़ाफिल न हो सको,और सिर्फ इतना खाओ कि बीमारी लाहेक़ न हो सके।
(460) हमेशा ख़्वाबों की दुनया में रहने वालों की ज़िन्दगी एक ख़्वाब बन जाती है।
(461) वह तालिब इल्म जो अपने उस्ताज़ की सख़्तियां नहीं झेल पाता उसे ज़िन्दगी में बहुत सख़्तियां झेलना पड़ती है।

(462) बन्दा जिस चीज़ से ड़रता है तो उस से दूर भागता है लेकिन बन्दा अल्लाह से डरता है तो उस के क़रीब आता है।
(463) मोमिन के शायाने शान यह है कि इल्म व अ़मल के ज़ेवर से आरास्ता और ख़ताओं से कनारा कश रहे।
(464) उस आदमी क्या क़द्र है जो रयाकारी का लिबास पहने होते हैं कि वह अपने लिबास के नीचे कई जिस्म रखता है।
(465) जिस के दिमाग़ में ग़ुरुर होता है उस के मुतअ़ल्लिक़ ख़्याल न करो कि वह सच्ची बात सुनेगा उसे इल्म से मलाल पैदा होगा और उसे वअ़ज़ से बदनामी पैदा होगी।
(466) होश मन्द और अ़क़ल मन्द इन्सान आ़जिज़ी को इख़्तियार किए हुए होता है क्यों कि फल से भरी हुई टेहनी ज़मीन की त़रफ झेकी होती है।
(467) जब लोग अपना इल्म,ज़ाहिर और अ़मल – ज़ाए करें और ज़बान से उल्फत का इज़हार और दिल में बुग्ज़ व अ़दावत और क़त़ए रहमी करें तो अल्लाह उन पर लअ़नत भेजता है।
(468) सच बोलने वाला और अमानतदार ताजिर क़्यामत के दिन नबिय्यों और सिद्दीक़ों के साथ होगा।
(469) मुसीबत के वक़्त सब्र न करना मुसीबत से ज़्यादा बड़ी मुसीबत है।
(470) ह़सद एक बुरी चीज़ है जो ईमान को खोखला और अल्लाह की रहमत से मह़रुम कर देती है।
(471) जो शख़्स मुख़्लिस और वफादार दोस्त रखता है वह दुनया का अमीर तरीन आदमी है।
(472) अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक फराइज़ की अदाएगी के बाद सब से अफ्ज़ल अ़मल मुसलमान के दिल में खुशी का दाखिल करना है।

(473) अपने दीन में इख़्लास पैदा करो तुम्हें थोड़ा अ़मल भी काफी होगा
(474) जो बचपन में अदब करना नहीं सीखता बड़ी उमर में भी उस से भलाई की कोई उम्मीद नहीं।
(475) चार शख़्सों के पास खली हाथ न जाओ (1)फक़ीर (2)अ़याल (3)बीमार (4) बादशाह।
(476) मुबारक हैं वह लोग जिन के पास नसीह़त करने के अल्फाज़ नहीं अअ़माल होते हैं।
(477) दूसरों के साथ ज़्यादा नेक सुलूक वही शख़्स कर सकता है जो खुद ज़्यादा मुसीबतों में मुब्तला रह चुका है।
(478) बुरे कामों के करने से जो डरे वह सब से बड़ा बहादुर है।
(479) ऐसा काम कभी न करो कि उस के बदले तुम्हें सज़ा दी जाए तो तुम रन्जीदा हो जाओ।
(480) बुज़्दिल इन्सान मौत आने से पहली कई बार मरता है, लेकिन बहादुर आदमी सिर्फ एक ही बार मरता है।
(481) इल्म रखने वाला अगर इस पर अ़मल न करे तो एक बीमार के मानिन्द है , जिस के पास दवा है लेकिन वह इस्तेमाल नहीं करता ।।
(482) दो भाइयों में दुशमनी न डालो क्यों कि उन में तो सुलह़ हो ही जाएगी और फिर तुम्हें बुरा ठेहराया जाएगा।
(483) जो अपने आप को दूसरों से कमतर समझे वह बहुत बड़ा आ़रिफ है।
(484) बे अ़मल आ़लिम और बे मअ़रिफत आरिफ उस चक्की के मानिन्द है जो रोज़ व शब चले,लेकिन यह न जाने कि किस ह़ाल में है।

(485) तू कितना भी इल्म सीख ले तुझ में अ़मल नहीं तो तू नादान है तो वह जानवर है जिसे यह पता नहीं कि उस की पीठ पर क्या रखा हुआ है।
(486) मौत से न डर बल्कि ज़िन्दगी से डर क्यों कि ज़िन्दगी में हज़ारों आफतें पोशीदा है।
(487) उस्ताज़ का ह़क़ यह है कि उसे इ़ज़्ज़त दी जाए और उस की बातों को ब ग़ौर सुन कर उस पर अ़मल किया जाए।
(488) उस खाने से बेहतर कोई खाना नहीं, जिस को अपने हाथों से काम कर के हासिल किया जाए।
(489) माले ग़नीमत की उम्मीद पर किसी की जान ज़बर दस्ती जोखों में मत डालो।
(490) अपना शिआ़र ख़ौफे ख़ुदा को बनाओ और उस मालिक से डरते रहो जो तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन का ह़ाल यक्सां जानता है।
(491) अपनी अ़क़्लों को नाक़िस समझते रहो कि अ़क़्ल पर यक़ीन करने से ज़रुर ग़लती ग़ल्ती सरज़द होती रहती है।
(492) सब गुनाहों के बावजूद तुझे अल्लाह की नेअ़मतें मिलती रहीं तो सूमझ लेना कि तेरा हिसाब क़रीब और सख़्त तर है।
(493) गुनाहों के फेलाने का ज़रिअ़ह मत बनो क्यों कि हो सकता है कि तुम तौबा कर लो, लेकिन जिस को तुम ने गुनाह पर लगाया है वह तुम्हारी आखिरत का सबब बन जाए।
(494) दुनया में हज़ारों दोस्त बनाओ लेकिन एक दोस्त ऐसा भी बनाओ,जब हज़ारों लोग आप के हखलाफ हों तो वह आप के साथ हो।
(495) हमेशा इतनी तौबा करते रहो कि ऐसा मअ़लूम हो तौबा ही इबादत है।।
(496) बे कारी और काहिली यह बहुत मुहलिक चीज़ है, जो इन्सान को तबाह व बरबाद कर देती है।

(497) वह ग़म जिस के मिलने पर तेरी तवज्जोह अल्लाह की त़रफ हो जाए उस खुशी से बेहतर है जिस के मिलने पर तू अपने रब को भूल जाता है।
(498) अच्छी तर्बियत और आदाब से बढ़ कर वालिदैन का अपनी औलाद को कोई तोह़फा नहीं।
(499) जो शख़्स अपने मौलाना की मुहब्बत का दम भरता है,तो अल्लाह तअ़ाला बलाओं से उस का इम्तेहान लेता है।
(500) तुम हर एक को खुश नहीं रख सकते लिहाज़ा हर काम में खुलूसे दिल पेशे नज़र रखो ।
(501) जो शख़्स गुनाह और बुराई पर शर्म करे वह फरमां बरदार है।
(502) नेक वह है जो अपना माल दूसरों पर खर्च करे ग़रीबों पर रह़म करे उन के पास उठे बैठे आ़लिमों की हमनशीनी इख़्तियार करे।
(503) अच्छा दोस्त वही है जो हुकूक़ल्लाह और हुकूकुल इबाद और अल्लाह का खौफ याद दिलाए।
(504) जो किसी से क़र्ज़ ले और उस की निय्यत यह हो कि वह उसे वापस नहीं करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस के माल को बरबाद कर देता है।
(505) जो बुरों से मुहब्बत करे और यह यक़ीन करे कि वह मुतमइन है तो गोया वह आस्तीन में सांप ले कर सोता है।
(506) जो हर मआ़मिले में नरमी और मेहरबानी का बरताव करता है उसे शिर्मिन्दगी और किसी भी बुराई का सामना नहीं करना पड़ता।
(507) खुशी का दरवाज़ा उस घर पर बन्द है जहां से औ़रत की आवाज़ ज़ोर ज़ोर से आती है।
(508) बुरी आ़दतें खुब सूरत इन्सान को को बद सूरत बना देती है।
(509) मोमिनों पर तीन एह़सान करो (1)नफा नहीं दे सकते तो नुक़्सान न करो (2) खुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा न करो (3) तअ़रीफ नहीं कर सकते तो बुराई न करो।
(510) शरम व ह़या औ़रत का ज़ेवर है जो उस की फितरत है, जो उस की हिफाज़त करती है तो मुआ़शेरे में अमन व सुकून रहता है।
(511) लोगों को सताने वाले से ज़्यादा बद नसीब कोई नहीं इस लिए कि मुसीबत के वक़्त उस का कोई दोस्त नहीं होता।।
(512) चार बदतरीन गुनाह यह है (1)गुनाह को मअ़मूली जानना (2)गुनाह कर के खुश होना (3)गुनाह पर असरार करना (4) गुनाह पर फखर करना ।
(513) अ़क़्ल मन्द इन्सान वह है जो अपने ह़क़ से काम लेने पर राज़ी रहे और दूसरों को उन के हक़ से ज़्यादा देने के लिए तय्यार रहे।

(514) बच्चे को बार बार टोकने और ज़्यादा सज़ा देने से वह बे शरम बन जाते हैं और उन की ह़या भी ख़तम हो जाती है।
(515) जो पाक दामनी की ज़िन्दगी जीते हैं उन के पूरे खान्दान को अल्लाह तआ़ला पाक दामनी की इज़्ज़त से सरफराज़ फरमादेता है।
(516) मुहताजों से माल मंहगे दामों में खरीदना एह़सान में दाखिल है।
(517) इन्सान अपना चेहरा तो खूब सजाता है जिस पर लोगों की नज़र होती है। मगर दिल सजाने की कोशिश नहीं करता जिस पर अल्लाह तआ़ला की नज़र होती है।
(518)अपने दिलों को बहुत ज़्यादा खाने पीने से मुरदह न बनाओ कि वह खेत कीत़रह है जो ज़्यादा पानी देने से पुज़्मुर्दा हो जाता है।
(519) किसी का अ़ैब तिलाश करने वाली की मिसाल उस मक्खी की सी है जो सारा खूबसूरत जिस्म छोड़ कर सिर्फ ज़खम पर बठती है।
(520) ज़्यादा एह़सान करने वाला वह है जो अपने बाप के बाद या बाप के कहीं चले जाने के पर उस के दोस्तों के साथ एह़सान करे।
(521) जिस से तुम नाराज़ हो जाओ फिर भी वह तुम से नाराज़ न हो तो ऐसों की सोह़बत इख़्तियार करो।
(522) इन्सान का फुजूल कामों में वक़्त गंवादेना इस बात की दलील है कि अल्लाह तआ़ला उस से नाराज़ है।
(523) किसी के पोशीदा अ़ैब को उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िकर करना ग़ीबत है।।
(524) सुफी ज़मीन के मानिन्द है जिस पर नेक और बद हर एक दौड़ता है और वह बादल की तरह़ हर एक पर साया करता है।
(525) उन लोगों को सलाम न करो जो एक दूसरे को मां बहन की गालियां दे कर खुश होते हैं।
(526) इल्म दीन की बरकत से पुल सिरात पर गुज़रने में आसानी होगी जब कि माल की वजह से पुल सिरात़ पर गुज़रने में रुकाट होगी ।
(527) हर अ़मल की क़बूलियत की तीन शरायत हैं, (1) ईमान के साथ हो(2)इख़्लास के साथ हो (3) सुन्नत के मुवाफिक़ हो।
(528) जो चाहते हो कि खुशयां तुम्हारे घरों को दस्तक दे तो यतीम और बे सहारों का सहारा बन जाओ ना खतम होने वाली खुशयां मिलेगी।
(529) सुकून हासिल करने की फिकर छोड़ दो सुकून देने की फिकर करो तो सुकून खुद ब खुद मिल जायेगा।
(530) मोमिन की मिसाल तराज़ू के पल्ले जैसी है जिस क़दर उस के ईमान में इज़ाफा होता है उसी क़दर उस की आज़माईश बढ़ जाती है।
(531) इल्म का तक़ाज़ा अ़मल है अगर तुम इल्म पर अ़मल करते तो दुनया से भागते,क्यों कि इल्म में कोई चीज़ नहीं जो हुब्बे दुनया पर दलालत करे।
(532) आ़लिम अगर ज़ाहिद न हो तो वह अपने ज़माने वालों पर अज़ाब से कम नहीं।
(533) मख़्लूक़ तीन त़रह़ की है, (1)फरिशता (2)शैतान (3) इन्सान .... फरिश्ता खैर ही खैर है और शैतान शर ही शर है। इन्सान मख़लूत है, जिस में ख़ैर भी है शर भी

है। जिस पर ख़ैर का ग़ल्बा होता है वह फरिश्तों से मिल जाता है और जिस पर शर का ग़ल्बा होता है वह शैतान से मिल जाता है।
(534) मोमिन अपने अहल व अ़याल को अल्लाह के नाम पर छोड़ता है और मुनाफिक़ ज़र व माल पर।
(535) अपनी मुसीबत को छुपाओ अल्लाह तआ़ला की क़राबत नसीब होगी।
(536) ज़िक्र जब क़ल्ब में जगह बना लेता है तो बन्दे का अल्लाह तआ़ला को याद रखना दाइमी बन जाता है,चाहे उस की ज़बान खामोश हो।
(537) तन्हाई में खामोश रहना बहादुरी नहीं, मज्लिस में खामोश रहने की कोशिश करो।
(538) रहने के लिए मकान, पहनने के लिए कपड़ा,पेट भरने के रोटी और बीवी दुनयादारी नहीं बल्कि दुनयादारी यह है कि अल्लाह तआ़ला की त़रफ पीठ कर के सिर्फ दुनया ही की तरफ मुंह हो।
(539) बेहतरन अ़मल लोगों को देना है लोगों से लेना नहीं।
(540) मख़लूक़ से मुहब्बत, मखलूक़ की ख़ैरख़्वाही है और यह दोनों जहां में सरखुरुई का सबब है।
(541) लोगों के सामने मुअ़ज़्ज़ज़ बने रहो, अगर अगर अपना इफ्लास ज़ाहिर करोगो तो लोगों की निगाहों से गिर जाओगे।
(542) जब तक तुम अपनी खुराक में अपने पड़ोसी को खुद पर तरजीह न दोगे त़ालिबे सादिक़ नहीं बन सकते।
(543) अपने माहौल से डरते रहो क्यों कि जिधर तुम देखोगे तुम्हारे इर्द गिर्द दरिन्दे ही दरिन्दे हैं।
(544) मयाना रवी निस्फ रिज़्क़ है और अच्छ इख़्लाक़ निस्फ दीन है।
(545) खामोश को आ़दत,गुमनामी को लिबास,और मख़लूक़ से दूरी,को मक़सूद बना लो भलाई क़दम चूमेगी।
(546) कोई अगर तुझ से, तेरे तेरे किसी ग़ीबत करने वाले की बात कहे तो उसे झिड़क दे और कह कि तू तो उस बदतर है जो उस ने पसे पुश्त कही तू मुंह पर कह रहा है।
(547) वह इन्सान कितना बद नसीब है जिस के दिल में जानदारों पर रह़म की आ़दत नहीं।
(548) तमाम अच्छाइयों का मजमूआ़ इल्म सीखना, अ़मल करना और दूसरों को सिखाना।
(549) जो अल्लाह तआ़ला से आशना हो उस ने ख़ल्क़े ख़ुदा के साथ नर्मी और तवाज़ोअ़ का बरताव किया।
(550)जिस अ़मल (इबादत व रियाज़त,नेकी)में तुझे ह़लावत न मिले यूं समझ कि तू ने वह अ़मल किया ही नहीं।
(551) गुम नामी इख्तियार करो क्यों कि शोहरत के मक़ाबिल उस में ज़्यादा अम्न व सुकून है।

(552) जब तक तेरा तेरा और गुस्सा करना बाक़ी है तो खुद को अहले इल्म शमार मत करो।
(553) फितना है वह रोज़ी जिस पर शुकर न हो, और वह तंगी,जिस पर सब्र न हो।
(554) बदगुमानी तमाम तर फवायद व समरात के रास्तों को बन्द कर देती है ।
(555) अ़वाम के सामने सिर्फ उसी बारे में बात करो जिस के बारे में तुम से सवाल किया जाए। उन के सामने न हंसो न मुसकराओ।
(556) बाज़ारों में ज़्यादा न जाओ, और दुकानों में न बैठो, न रास्तों में ठेहरो, घर के इलावह अगर किसी जगह बैठना चाहो तो मस्जिद में बैठो।
(557) रास्ता चलने में वक़ार व त़मानियत इख़्तियार करो, कामों में जल्दी न करो, जो शख़्स तुम्हें पीछे से पुकारे उस पर तपज्जोह न दो।
(558) कन्जूसी से गुरेज़ करो क्यों कि कन्जूसी इन्सान को रुसवा करती है और न लालची बनो और झूठा बनो बल्कि अपनी मुरव्वत हर मुआ़मिले में महफुज़ रखो।
(559) बड़ों के होते हुए उस वक़्त तक अपनी नशिस्त में बरतरी इख़्तियार न करो,जब तक वह तुम्हें पेश कश न करें।
(560) किसी ह़रीस को अपना मुशीर न बनाओ क्यों कि वह तुम से वुस्अ़ते क़ल्ब और इस्तेग़ना छीन लेगा।
(561) किसी बुज़दिल को अपना मुशीर न बनाओ क्यों कि वह तुम्हारे दिलों और ह़ौसलों को पस्त कर दे।
(562) किसी जाह पसन्द को अपना मुशीर न बनाओ क्यों कि वह तुम्हार अन्दर ह़िर्स व लालच पैदा कर के तुम्हें ज़ालिम बना देगा।
(563) तंग दिली, बुज़दिली और लालच इन्सान से उस का ईमान सल्ब कर लेती है।
(564) ऐसे मुशीर बेहतर हैं जिन्हें खुदा ने ज़हानत व बसीरत दी, जिन के दामन दाग़ गुनाह और किसी ज़ुल्म की इआ़नत से पाक हों ।
(565) ज़माने के एक एक लमहे में आफात और बलिय्यात पोशीदा हैं मौत एक बे खबर साथी है
(566) नदामत गुनाहों को मिटा देती है और गुरुर नेकियों को।
(557) किसी मुनाफिक़ और फासिक़ की बुराई बयान करना ग़ीबत में दाखिल नहीं है।
(558) जल्द मुआ़फ करना शराफत और बदला लेने में जल्द बाज़ी करना इन्तेहाई रज़ालत है ।
(559) बुरा आदमी किसी के साथ नेक गुमान नहीं करता क्यों कि वह हर एक को अपनी ही त़रह़ समझता है।
(560) पड़ोसी की बद ख़्वाही और नेकियों के साथ बुराई बद तरीन ज़ुल्म है।
(562) जो शख़्स नेक सुलूक करने से दुरुस्त न हो और बद सुलूकी से दुरुस्त हो जाता है।
(563) शरीफों को जल्द गुस्सा नहीं आता और जब आता है तो अगली पिछली सब क़ज़ाएं अदा कर देते हैं।
(564) जो शख़्स अपने अक़वाल में ह़यादार है वह अफ्आ़ल में भी ह़यादार होगा।
(565) जिस के ख़्यालात ख़राब होते हैं वह दूसरों के ह़क़ में ज़्यादा बदज़न होता है।

(566) हिकमत की बात गोया मोमिन की गुमशुदा चीज़ है जिसे वह जहां देखता है ले लेता है।
(567) बसारत का चले जाना , चश्मे बसीरत के अन्धा होने से बच्छा है।
(568) जो शख़्स माल देने में से सब से ज़्यादा बख़ील है वह अपनी इज़्ज़त देने में सब से ज़्यादा सखी होता है।
(569) जो शख़्स अपने दुशमन के क़रीब रहता है उस का जिस्म ग़म से घुल कर लाग़र हो जाता है।
(570) दीन की दुरुस्ती दुनया के नुक़सान करने से हासिल होती है।
(571) सच्चाई एक निहायत ज़बर दस्त मददगार है जब कि झूठ बहुत कमज़ोर मुआविन है।
(572) सब्र एक ऐसी सवारी है जो कभी ठोकर होती है।
(573)दुशमन के हुस्ने सुलूक पर भरोसा मत करो क्यों कि पानी को आग से कितना ही गरम किया जाये फिर भी वह उस के बुझाने के लिए काफी है।
(574) शरीफ आ़लिम तवज़ोअ़ और आ़जिज़ी इख़्तियार करता है और जब कमीना बा इल्म हो जाता है तो गुरुर में मुब्तला हो जाता है।
(575) शराफत अपनी बलन्द हिम्मती से हासिल होती है न कि बाप दादा पर फख्र करने से।
(576) जिस शख़्स का राज़ उस के सीने में नहीं समा सकता उस के बचाव की कोई तदबीर नहीं।
(577) बेशक दुनया व आख़िरत की मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स की दो बीवियां हों कि जब एक को राज़ी करता है तो दूसरी नाराज़ होती है।
(578) बुराईयों से परहेज़ करना नेकियां कमाने से बेहतर है।
(579) कमाल और बुज़ुरगी को ग़नीमत जानो और उस को हासिल करने में जल्दी करो।
(580) ह़ाजत मन्दों का तुम्हारे पास आना इन्आ़माते इलाहिया से है तो उस को ग़नीमत जानो और ह़ाजत मन्दों की ह़ाजत रवाई करते रहो।
(581) जो सख़ावत करेगा वह सरदार होगा, जो बुख़्ल करेगा वह ज़लील होगा।
(582) दुनया को एक मन्ज़िल समझो कि वहां उतरे और कूच किए या वह दौलत समझो जो ख़्वाब में मिले और बेदारी के बाद कुछ हाथ न आए।
(583) जो शख़्स हर कस व नाकस के पास उठता बैठता है वह सलामत नहीं रहता,अच्छों की सोहबत इख़्तियार करने ही में सलामती है ।
(584) जो बुनयाद कभी वीरान न हो अ़दल है, तलख़ी जिस का आख़िर शीरीं हो,सब्र है ।और वह शीरीं जिस का आख़िरी तल्ख़ हो श्रहवत है और वह दबीला जिस से लोगों को भागना चाहिए वह अ़ैश है।
(585)रंज व मुसीबत आये तो उस का बेहतरीन इलाज उन को छुपाने ही में है।
(586) मोनिन कामिल अपनी सिफात व ह़स्नात में आफताब की त़रह़ है जो सब रोशनी डालता है, वह ज़मीन के मानिन्द है जो तमाम मख़लूक़ात का बार उठाता है, वह पानी की त़रह़ है,जिस से दिलों को ज़िन्दगी हासिल होती है।

(587) अमीर हमसायों,बाज़ारी क़ारियों, और दौलत मन्द आ़लिमों से हमेशा दूर रहो।
(588) जिस शख़्स को नेअ़मत की क़द्र नहीं होती उस की नेअ़मत वहां से ज़वाल पज़ीर होना शुरु होती है। जहां से उस को गुमान भी नहीं होता ।
(589) जो अल्लाह तआ़ला का फरमांबरदार बन्दा बन जाता है लोग उस के फरमांबरदार बन जाते हैं।
(590) वह लोग निहायत क़ाबिले अफसोस हैं जो अपने एख़लाक़ से लोगों के दिलों को खुश नहीं रखते, हालां कि दिलों का खुश रखना खुदा की खुशनूदी की दलील है।
(591) दूसरों की अ़ैब जोई करने से पहले अपने अ़ैबों पर नज़र करो।
(592) अ़क़्ल मन्द वह है जो ग़िज़ा की लज़्ज़त के वक़्त दवा की कड़वाहट को महसूस करे।
(593) ग़ल्ती इन्सान की सरिश्त में है उस की मुआ़फी चाहना मोमिनों का शीवा है और उस पर असरार करना शैतान का काम है।
(594) हर क़ौम की इज़्ज़त और रज़ालत का दार व मदार उस क़ौम के अमीरों पर है।
(595) जब इफ्फत व अ़स्मत के आइना को ठेस लग जाती है तो उस को कोई कारीगर दुरुस्त नहीं कर सकता ।
(596) रुअ़ब व दबदबा से वह काम नहीं निकल पाता जो आ़जिज़ी और इन्केसारी से हो जाता है।
(597) मख़लूक़ में बदतीन शख़्स वह है जिस से लोग पनाह मांगते हों।
(598) तुम आ़लिमे बा अ़मल की हम नशीनी इख़्तियार करो, और हिकमत की बातें ग़ौर से सुनो इस लिए कि अल्लाह तआ़ला मुर्दा दिलों को हिकमत से इस त़रह़ ज़िन्दगी बख़्शता है जिस त़रह़ मुर्दा ज़मीन को बारिश से शादाब करता है।
(598) इल्म आंखों की रोशनी, दिलों की ज़िन्दगी, सीनों की ताबिन्दगी, और ला ज़वाल दौलत है।
(599) जो शख़्स आमाले ख़ैर के बग़ैर क़ब्र में दाखिल हुआ उस की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो समन्द्र में बग़ैर कश्ती के दाखिल हुआ।
(600) जो चीज़ इन्सान को सब से ज़्यादा जन्नत में ले जाने वाली है वह तक़वा और हुस्ने एख़लाक़ है।
(601) जो यह समझे कि उस के नफ्स से बढ़ कर कोई और भी उस का दुशमन है तो समझ लेना चाहिए कि उस ने अपने नफ्स को नहीं पहचाना।
(602) जब ज़बान बिगड़ जाती है तो दुनया में लोग वावैला मचाते हैं। लेकिन जब दिल बिगड़ जाता है तो फरिश्ते उस पर आंसू बहाते हैं।
(603) अच्छी बात कहना खामोशी से बेहतर और बुरी बात बोलने से चुप रहना बेहतर है।
(604) ख़्वाहिशे नफ्स की पैरवी बादशाहों को ग़लाम बना देती है और ज़ब्त व बरदाश्त की कुव्वत गुलामों को मन्सब शाही तक पहोंचा देती है।

(605) जिस ने गुनाहों को छोड़ा उस का दिल नरम व गुदाज़ हो जाता है और जो ह़राम से बचे और रिज़्क़े ह़लाल खाए, उस की फिकर में पाकीज़गी और त़हारत पैदा होती है।
(606) अ़क़्ल की तक्मील दो बातों पर अ़मल करने से होती है (1) रज़ाए इलाही का हुसूल (2) अल्लाह की नाराज़गी से डरते रहना।
(607) अपनी कोताही और ग़ल्ती को मान लेने वाला हमेशा हर दिल अ़ज़ीज़ और लोगों की निगाहों में लाइक़े तहसीन रहता है।
(607) तीन चीज़ें तीन चीज़ों से हासिल नहीं की जासकतीं। (1)दौलत तमन्ना से (2) जवानी ख़िज़ाब से (3) तन्दुरुस्ती, सिर्फ दवाओं से।
(608) कामयाब शख़्स की पैरवी करने से आदमी कामयाब होता है।
(609) मुखालिफते नफ्स तमाम इबादतों का सर चश्मा है।
(610) बदन की सलामती कम खाने में,और रुह़ की सलामती तर्के गुनाह और दीन की सलामती हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर दरुद भेजने में है।
(611) अगर कोई तुम्हारा अ़ैब ज़ाहिर करे तो देखो कि वह अ़ैब तुम में पाया जाता है तो उस से बाज़ आओ और अ़ैब ज़ाहिर करने वाले से कहो कि तुम ने मुझ पर करम किया कि मेरा अ़ैब मुझ को बता दिया।
(612) यह बड़ी खुश क़िस्मती है कि हम अल्लाह तआ़ला को एक मानते हैं मगर यह बड़ी बद नसीबी है कि हम उस की एक भी नहीं मानते।
(613) इन्सान की खुश क़िस्मती दीन व ईमान की हिफाज़त और आखिरत के लिए अअ़माले ख़ैर अन्जाम देने में है।
(614) जो शख़्स अच्छी किताबें पढ़ने का शौक़ नहीं रखता वह मेअ़राजे इन्सानी से गिरा हुआ है।
(615) दुनया में उन ही लोगों की इ़ज़्ज़त होती है,जिन्हों ने अपने उस्ताज़ का एहतेराम किया।
(616) उस्ताज़ की हमेशा इ़ज़्ज़त करनी चाहिए,उस्ताद,उस्ताद ही रहते हैं, हो सकता है आगे चल कर तुम इल्म व फज़ल में उन से आगे निकल जाओ लेकिन फिर भी उन का रुत्बा कम नहीं होगा।
(617) शोहरत और नामवरी की ख्वाहिश मअ़मूली ज़हन रखने वालों की एक खुली हुई कमज़ोरी है और बड़े ज़हन रखने वालों की पोशीदा कमज़ोरी।
(618) किसी को नसीहत न करो क्यों कि बे वक़ूफ सुनता नहीं और अ़क़्लमन्द को उस की ज़रुरत नहीं।
(619) हुस्ने सीरत बुराइयों से परहेज़ करने का नाम नहीं,बल्कि ज़हन में बुराई के इरतिकाबे की ख्वाहिश न पैदा होने का नाम है।
(620) खामोशी इज़हारे नफरत का सब से बहतर तरीक़ा है। खामोश और कम गो आदमी का हर जगह इस्तेक़बाल होता है।
(621) अपने दिलों को अ़दावत और नफरत के जज़्बात से पाक करो और मुहब्बत का मस्कन बनाओ।

(622) इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही वह दौलत है जिस से ईमान की बक़ा और इस्लाम का वक़ार क़ायम है, सहने चमन में उसी की बहारें हैं।
(623) प्यार एक ऐसा हथियार है जिस की के आगे हर दीवार मुन्हदिम हो जाती है।
(624) खुश आमद की छुरी,अक़्ल व फहम के परों को काट कर ज़हन को परवाज़ की आज़ादी से महरुम कर देती है।
(625) लम्बी लम्बी आरज़ूएं करने वाले इन्सान की जेबें भरती हैं दिल नहीं भरता।
(626) दुनया में हर तरफ फसाद सिर्फ अपने हक़ को पाने के लिए होता है इस लिए अपने हुक़ूक़ को मुआफ करना सीखो,अमन व शान्ती की फज़ा क़ायम हो जाएगी।
(627) कोशिश करो कि तुम दुनया में रहो दुनया तुम में न रहे, क्यों कि कश्ती जब पानी में रहती है खूब तैरती है और जब पानी कश्ती में आजाता है तो वह डूब जाती है।
(628) तीन इन्सान तीन चीज़ों से महरुम रहेंगे।(1)गुस्से वाला,सही फेसला करने से (2) झूठा,इज़्ज़त से (3) जल्द बाज़,कामयाबी से।
(629) इबादत में दिखावा न करो इस लिए कि दिखावे से अमल बर्बाद हो जाते हैं , किसी के देखने न देखने की तरफ तवज्जोह ही न दो।
(630) किसी की मदद करते वक़्त उस के चेहरे की तरफ मत देखो, हो सकता है कि उस की शर्मिन्दा आंखें तुम्हारे दिल में गुरुर का बीज न बो दे।
(631) वह इल्म दिल में घर करता है,जिस के सिखाने में दुनयावी लालच न हो।
(632) लालच करना मुफ्लिसी है बे ग़र्ज़ बन जाओ अमीर हो जाओगे।
(633) तुम हर इन्सान के साथ नेकी ही करो ख़्वाह तुम्हारे साथ कोई नकी न करे।
(634) इतनी धीमी में भी न बोलो कि सुन ने वाला तुम्हारी बात न समझ सके और बुलन्द आवाज़ में भी न बोलो, जिस से सुन्ने वाला समझे कि तुम उसे बहरा समझते हो।
(635) दोस्ती ज़रुर इख्तिया करो मगर अपनी इज़्ज़त व आबरु हरगिज़ हाथ से न जाने दो।
(636) जिस दिल में कुव्वते बर्दाश्त न हो वह कभी कामयाब नहीं हो सकता।
(637) जो आदमी कोई बात जानता है वह उस के लिए मुश्किल नहीं होती,जिस आदमी को वह बात नहीं मालूम होती वह उसे मुश्किल मअ़लूम होती है, लेकिन अगर आदमी घबराए नहीं और मअ़लूम करने की कोशिश करे तो वह आसान होजाती है।
(638)जिस चीज़ का यक़ीन न हो उस के पीछे न पड़ो,क्यों कि क़्यामत के दिन कान,आंख और दिल से सवाल किया जाएगा।
(639) कम बोलना शराफत और अ़क़लमन्दी की दलील है ज़्यादा बोलने वाला तरह तरह की आफतों में मुब्तला हो जाता है।
(640) अल्लाह तआ़ला हर गुनाह में से जिसे चाहता है बख़्श देता है सिवाए मां बाप की ना फरमानी के।
(641) अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतों और दौलत को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों और अअ़माल को देखता है।
(642) अल्लाह ज़ालिम को मोहलत देता है मगर जब पकड़ता है तो छोड़ता नहीं।

(643) जिस को यह पसन्द कि उस की रोज़ी में कुशादगी और उ़मर में ज़्यादती हो तो उसे अपने रिश्तेदारों और अहल व अ़याल के साथ अचछा सुलूक करना चाहिए।
(644) किसी को पछाड़ देना बहादुरी नहीं,बहादुर तो वह है,जो गुस्सा के वक़्त अपने आप को क़ाबू में रखे।
(645) स्वालेह (नेक) हम नशीन और बुरे हम नशीन की मिसाल ऐसी है जैसे खुशबू बेचने वाला अ़त्तार और भट्ठी फूंकने वाला लोहार।
(646) अपने सदक़ात को एह़सान जता कर और तक्लीफ पहोंचाकर बातिल न करो।
(647) जो अपने भाई से दुनया का ग़म दूर करता है, अल्लाह क़्यामत के दिन उस के ग़म दूर करेगा।
(648) बदों से नेकी करना नेकों का काम है और नेकों से बदी करना बदों का काम है।
(649) जिस किसी ने ज़ालिम की मदद की उस ने गोया ग़ज़ब इलाही को खुद अपने सर ले लिया।
(650) तुम नेकी के क़ाबिल बन जाओ कि बद बख़्ती का दस्तर ख़्वान कोई खाना नहीं देता,अगर तुम खुद तुम नेक नहीं तो तुम्हें नेक निस्बत भी फायदा नहीं पहोंचा सकती।
(651) बुरों के साथ कम बैठो कि बुरी सोहबत अगरचे तू पाक है तुझे गन्दा कर देगी जैसे चमकते हुए सूरज को भी एक ज़रा सा बादल छुपा देता है।
(652)इस खुश्की और तरी की दुनया में किसी के लिए क़नाअ़त से बढ़ कर कोई दौलत नहीं, क़नाअ़त पसन्द अगर गदागरी भी करे तो वह हक़ीक़त में बादशाही कर रहा है।
(653) अगर तुम लज़्ज़तों को छोड़ने की लज़्ज़त जान लो तो फिर नफ्स की लज़्ज़त को लज़्ज़त न जानो।।
(654) इन्सान की शराफत इसी में है कि आदमी तक़्वा और परहेज़गारी हासिल करे और इबादत में मसरुफ रहे।
(655) सब्र मुसीबतों और परेशानियों का एख़लाक़ी मुक़ाबला है। इन्सान अ़दल और ह़क़ परस्ती पर उस के बग़ैर क़ायम नहीं रह सकता।
(656) इन्सान को तीर मारना उस को ज़बान से त़अ़न व तश्नीअ़ करने से कम है क्यों कि ज़बान के निशान कभी ख़तम नहीं होते।
(657) मोमिन बात कम और काम ज़्यादा करता है और मुनाफिक़ बात ज़्यादा और काम कम करता है।
(658) जो ईमान हमें बिस्तर से उठा कर मस्जिद या मुसल्ले तक नहीं ले जा सकता वह जन्नत तक कैसे ले जायेगा।
(659) जो मोमिन है वह न तो इस दुनया की त़रफ सुकून करता है और न उस चीज़ की त़रफ जो दुनया में है।
(660) इल्म सीखना बग़ैर अ़मल के मख़्लूक़ की त़रफ लौटाएगा और तुम्हारा इल्म पर अ़मल करना अल्लाह तआ़ला की त़रफ पहोंचाएगा।

(661) तुम लोगो से इल्म व अ़मल और एख़्लाक़ की ज़बान में बात चीत किया करो,ऐसी ज़बान से बात न करो जो कि बिला अ़मल और अख़्लाक़ से आ़री हो क्यों कि वह तुझे और तेरे पास बैठने वालों को नफ़अ़ न देगी।
(662)लोगों की अव्वलीन नेकी ज़ोहद और यक़ीने कामिल है और उन की हलाकत का आखिरी सबब बुख़्ल और झूठी उम्मीदें हैं।
(663) जो शख़्स अपने नफ्स पर क़ाबू पालेता है वह उस शख़्स से ज़्यादा ताक़तवर है जो तने तन्हा एक शहर को फतह कर लेता है।
(664) जिस इन्सान पर उस का नफ्स ग़ालिब आजाता है व शहवात का क़ैदी हो जाता है, और बेहूदगी का ताबेअ़ बन जाता है, उस का दिल तमाम फवायद से खाली हो जाता है।
(665) जंग के दौरान जिस का घोड़ा भाग जाता है वह दुशमनों के हाथ लग जाता है लेकिन जिस का ईमान भाग जाता है वह ग़ज़बे इलाही में गिरिफ्तार हो जाता है।
(666) ग़फ्लत से शर्मिन्दगी बढ़ती है और नेअ़मत ज़ायल होती है,ख़िदत का जज़्बा मांद पड़ जाता है।
(667) हर वह गुनाह जिस की बुनयाद तकब्बुर और खुदबीनी है उस की मग़फिरत ना मुम्किन है।
(668) सब से बड़ी बेवक़फी यह है कि काम दोज़ख के लिए किए जायें और तवक़्क़ोअ़ जन्नत की की जाये।
(669) सब से बड़ा अ़ैब वह है जो अपने आप को महसूस न हो।
(670) अपने दोस्त को ख़ालिस तरीन मुहब्बत दे दो लेकिन राज़ न दो कहीं यह अन्धा एतिक़ाद तुम्हें नाग की त़रह़ डस न ले।
(671) दुनया एक मुर्दार की त़रह़ है जो लोग उस की बदौलत भाई बन्द बने रहते हैं उन के भाई उस की लालच में एक दूसरे पर ह़म्ला करने से मानेअ़ नहीं होते।
(672) बूढ़े की राय जवान की कुव्वत व त़ाक़त से अच्छी होती है।
(673) जिस बात को तुम अच्छा समझते हो उसे मुख़्तसर कर दो कि यह तुम्हारे ह़क़ में निहायत बेहतर है और तुम्हारे फज़्ल व कमाल की निशानी है।
(674) बेहतरीन बात वह है जिस से सुन ने वाले को गिरानी और मलाल न पैदा हो।
(675) शरीर से काई अच्छी बात देखो तो उस से धोखा न खाओ,और शरीफ से कोई ग़ल्ती सरज़द हो जाये तो उस से नफरत न करो।
(676) सब्र और शुकर दुनया की मीठी चीज़ों में से ज़्यादा शीरीं है।
(677) छोटे और तारीक घर क़बूल कर लो मगर छोटे और तारीक ज़ेहन (दिमाग़) का साथ क़बूल मत करो।
(678) कोई ऐसा दरवाज़ा मत खोलो जिसे तुम बअ़द में बन्द न कर सको।
(679) रिश्तों और इन्सानों से बढ़ कर कुछ भी अहम नहीं ब शर्त यह कि वह हमारे साथ नेक और पुर ख़ुलूस हों।
(680) नाम और किरदार को इस ह़द तक मज़बूत़ करें कि लोग आप की शराफत की मिसालें दें।

(681) ज़बान एक अ़ज़्व (अंग) बे इस्तेख़वान (बग़ैर हडडी) है अगर यह दुरुस्त है तो ज़बान है नहीं तो ज़यान है।
(682) हम एक दूसरे के साथ तो रहते हैं मगर एक दूसरे को समझने की कोशिश नहीं करते।
(683) जिसे रिश्तों का पास नहीं वह किसी से मुहब्बत नहीं कर सकता ।
(684) दूसरों की ख़ामियां तिलाश करने से पहले अपनी ख़ामियां तिलाश करो।
(685) अल्लाह तआ़ला की ज़ात पर कामिल भरोसा रखने और मायूसी के अपने उपर ग़ालिब न होने देने से कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी।
(686) कामयाबी चाहते हो तो अज़ीम शख़्सिय्यात की ज़िन्दगी का मुत़ालआ़ करो,जाहिल लोगों की महफिल में बैठने से परहेज़ करो।
(687) प्यार दिल में होना चाहिए लफ्ज़ों में नहीं, और नाराज़्गी लफ्ज़ों में होना चाहिए दिल में नहीं।
(688) अल्लाह तआ़ला से हमेशा वह मांगो जो तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो न कि जो तुम चाहते हो,हो सकता तुम्हारी चाहत बहुत कम और तुम्हारा ह़क़ बहुत ज़्यादा हो।
(689) ज़िन्दगी हमारे बस में नहीं मगर दूसरों को खुश रखना तो हमारे इख़्तियार में है खुशयां बांटते रहो सरखुरु हो जाआगे।
(690) एतिदाल(मध्यम चाल) बेहतरीन राह है क्यों कि पांव आग के अ़लाव में हो या बर्फ की सिल पर दोनों सूरतों में परेशानी हमारा मुक़द्दर है।
(691) अहमियत दुख की नहीं दुख देने वाले की होती है। ऐसे दोस्तों से दूर रहना होना ज़्यादा अच्छा है । जो खेल खेल में ज्यादती से खेल जाता है।
(692)निगाहें नीची रखने से दिल में कुव्वत और देलेरी का ज़ज़्बा पैदा होता है।
(693) ज़िन्दगी दूसरों से क़र्ज़ नहीं ली जा सकती उसे खुद अपने अन्दर रोशन करने की ज़रुरत है।
(694) अ़मल दिल को इस त़रह़ ज़िन्दा रखता है जैसे कि बारिश ज़मीन को।
(695) जो शख़्स इल्म की मुसीबत नहीं झेलता उसे हमेशा जहालत की ज़िल्लत झेलना पड़ती है।
(696) जब तक तुम कोशिश न करो तुम नहीं जान सकते कि तुम किया कुछ कर सकते हो।
(697) कामयाबी का सब से बड़ा राज़ ख़ुद एतेमादी और मुस्तक़िल मेज़ाज़ी है।
(698) किसी का दिल मत दुखाओ क्यों कि कोई तुम्हारा दिल भी दुखा सकता है।

(699) हक़ का परस्तार कभी ज़लील व रुसवा नहीं हो सकता चाहे सारी दुनया उस की दुशमन हो जाए।
(700) हमें खुशी से वह रवाज छोड़ देना चाहिए जो इन्साफ और मज़हब के खिलाफ हो।
(701) आपस में सलाम का रवाज आ़म करने से मुहब्बत बढ़ती है।
(702) एक दूसरे को तोहफे तहाईफ देना चाहिए कि उस से अ़दावत और कीना दूर होता है।

(703) अच्छे लोगों के दरमियान दोस्ती जलदी क़ायम हो जाती है और टूटती देर से है उस की मिसाल सोने के प्याले जैसी है।
(704) महब्बत हर क़िस्म की कुरबानी मांगती है और कुरबानी सिर्फ सच्ची महब्बत करने वाले ही देते हैं।
(705) मुस्कराहट खूबसूरती की अ़लामत है और खूबसूरती ज़िन्दगी की अ़लामत है।
(706) दिल आइने की त़रह साफ रखो और ज़बान शहद की त़रह मीठी।
(707)किसी भी काम में जल्द बाज़ी करने वाला खुद भी बर्बाद होता है और दूसरों को भी बरबाद करता है।
(708) लालच से रोज़ी नहीं बढ़ती लेकिन आदमी की क़द्र व मन्ज़िलत घट जाती है।
(709) अय्यारी व मक्कारी उस छोटे कम्बल के मानिन्द है जिस से सर छुपाओ तो पैर नंगे हो जाते हैं।
(710) अच्छी सोच अच्छे ज़ेहन की अक्कासी करती है।
(711) मसरुफियत और उदासी उक साथ नहीं रहतीं।
(712) महब्बत और नफरत के लिए इन्सान का वजूद समन्दर से भी गहरा होता है।
(713) वह आसू बड़े मुक़द्दस है जो दूसरों के दुख में निकलें।
(714) ऐसे आंसू रोक लो जो किसी की खुशी में रुकावट बनें,चाहे वह हमें उस से मिले हों।
(715) ज़बान की लग़्ज़िश क़दम की लग़्ज़िश से ज़्यादा खतरनाक होती है।
(716) ग़रीब के साथ हमदर्दी से पेश आओ ताकि उस की ज़बान खुले और हिम्मत बढ़े।
(717) खुदा जिसे ज़लील करना चाहे वह दौलत की तिलाश में लग जाता है।
(718) ऐसा इशारा करना भी ह़राम है जिस से दूसरों को तक्लीफ पहोंचे।
(719) जो शख़्स अपने नफ्स का मुअ़ल्लिम नहीं बन सकता दूसरों को क्या दर्से हिदायत देगा।
(720) अगर कुछ लोग साथ छोड़ दें तो उन लोगों को सफर नहीं छोड़ चाहिए जिन्हें रास्ता मअ़लूम है।
(721) महब्बत की इमारत में शक की दराड़ पड़ जाए तो वह इमारत के गारे से भर तो जाती है मगर उस का निशान बाक़ी रह जाता है।
(722) नई बुनयादें वही लोग भर सकते हैं जो इस राज़ से वाक़िफ हों कि पुरानी बुनयादें क्यों बैठ गईं।
(723) रिज़्क़ ही नहीं कुछ किताबें भी ऐसी होती हैं जिस के पढ़ने से परवाज़ में कोताही आजाती है।
(724) अफराद और अ़क़्वाम,वाक़िआत से हमेशा अपने मेज़ाज के मुताबिक़ सबक़ हासिल करते हैं।
(725) जो मख़लूक़ से दूरी एख्तियार करे और उन्हें रंज दे वह खालिक़ से कैसे क़रीब हो सकता है।
(726) कितने अफसोस की बात है कि हमारे उठने से पहले परिन्दे उठ जाते हैं।
(727) किसी शख़्सियत को परखना इतना मुश्किल नहीं जितनी वक़्त की शनाख़्त।

(728) किसी पर कीचड़ मत उछालो,क्यों कि उस तक कीचड़ बाद में पहोंचेगा पहले तुम्हारे हाथ गन्दे होंगे।
(729) इन्सानियत एक मुशतरका दौलत है जिस की हिफाज़त हर इनसान पर फर्ज़ है।
(730) दूसरों के जज़्बात और एहसासात का ऐहतेराम करो क्यों कि यही वह मुक़ाम है जहां इन्सानियत की तक्मील होती है।
(731) अज़मत और बुज़रुगी एक फूल की मानिन्द है उसे हासिल करने के लिए कांटों से गुज़रना पड़ता है।
(732) फक़ीर वह है जिस की खामोशी फिकर के साथ और गुफ्तगू ज़िक्र के साथ हो।
(733) हिक्मत एक दरख़्त है जो दिल से उगता है और ज़बान पर फल देता है।
(734) सख़ावत यह है कि अपनी इस्तेताअ़त (ताक़त)से ज़्यादा और क़नाअ़त यह है कि अपनी ज़रुरत से कम लो।
(735) मर्ज़ का बाप कोई भी हो,खराब गि़ज़ा उस की मां ज़रुर होती है।।
(736) तलवार से इतने आदमी नहीं मारे जाते जितने बसयारखूरी से मारे जाते हैं।
(737) तुम जहां चाहो ज़मीन खोद लो,ख़ज़ाना तुम्हें ज़रुर मिलेगा शर्त सिर्फ यह है कि ज़मीन कामयाबी के यक़ीन के साथ खेदो।
(738) जो शख़्स दवा खाता है लेकिन गि़ज़ा का ख़्याल नहीं रखता,वह अपने तअ़ालिज की क़ाबिलियत खाक में मिला देता है।
(739) क़िल्लते अक़ल का अन्दाज़ा कसरते कलाम से होता है।
(740) दोनों तरफ का झगड़ा सुन ने पहले फेसला करना इन्साफ के साथ मज़ाक़ करने के मुतरादिफ है।
(741) जो इन्सान अपनी निगाह में मुअत्तबर न हो उस पर कौन एतेबार करे।
(742) बातें और सिर्फ बातें अ़मल के पांव में भारी ज़न्ज़ीरें हैं।
(743) इन्सान फैसला एक लम्हे में करता है और फिर उस फैसले का नतीजा सारी उमर साथ रहता है।
(744) हम यादें ले कर चलते हैं और यादें छोड़ कर चले जाते हैं।
(745) जिन लोगों के दिलों में मुहब्बतों की कोंपलें बग़ैर किसी सिले या तमन्ना के फूटें वह बेहिस नहीं बेगर्ज़ होते हैं।
(746) दिल के अल्बम में दिल लगी के लिए तस्वीरें न लगाएं बल्कि ऐसी तस्वीरें लगाएं जो दिल को लगें।
(747) वह शख़्स अक़लमन्द नहीं जो दुनया की लज़्ज़तों से खुशी और मसायब से परेशान होता है।
(748) अपने लफ्ज़ों को क़ाबू में रखो और बात करने से पहले उस के नताइज के बारे में ग़ौर व फिकर कर लो क्यों कि अल्फाज़ तुम्हें इज़्ज़त और ज़िल्लत देने पर क़ादिर हैं।
(749) दुनया में उन लोगों की इज़्ज़त होती है जो अपने उस्ताजों का एहतेराम करते हैं।
(750) साफ गाई से नुक़सान बहुत कम मगर फाइदा बहुत ज़्यादा होता है।
(751) मुस्तहिक़ साईल अल्लाह का अ़तिया है जो बन्दों की तरफ भेजा जाता है।

(752) जब ह़लाल व ह़राम जमा हों तो ह़राम ग़ालिब होता है चाहे वह थोड़ा ही हो।
(753) इल्मे दीन वह है जो खुदाए तआ़ला का खौफ पैदा करे और अपने दिल को दीन की तरफ लगाए और बुरे अफ़ुआ़ल (कामों) से इज्तेनाब करे।
(754) जो दीन से दूर और शरीअ़त से नफ़ूर हैं उन से मेल जोल न रखो।
(755) दअ़वत ब निय्यते सुन्नत और फक़ीरों की राह़त के लिए करनी चाहिए न कि बड़ाई और शोहरत के लिए ।
(756) जिस का लिबास बारीक और हलका होगा उस का दीन भी ज़ईफ होगा।
(757) उलमाए बे अ़मल पारस पत्थर की त़रह है जो दूसरों को तो सोना बनाता है मगर खुद पत्थर का पत्थर ही रहता है।
(758) ज़िन्दगी की फुरसत बहुत कम है और हमेशा का अ़ज़ाब या राह़त उस पर मरत्तिब है।
(759) दुनया की महब्बत आखिरत की रग़बत से दूर होती है और आखिरत की रग़बत अअ़माले सालिहा के बजा लाने पर वाबस्ता है।
(760) दुनया काश्तकारी और तुख़्म रेज़ी का मुक़ाम है न कि खाने पीने और सोने का।
(761) दूसरों का ह़क़ यहीं दुनया में दे दो या मुआ़फ करा लो वरना आख़िरत में देनी पड़ेंगी।
(762) जो दरख़्त जितना ज़्यादा फल देता है उस पर उतने ही ज़्यादा पत्थर आते हैं।
(763) जिस गुनाह के बाद नदामत का एह़सास न जागे,अन्देशा है कि वह तुझे इस्लाम से बाहर करने का सबब न बन जाए।
(764) अपनी ज़िन्दगी को फूलों की त़रह गुज़ारो ताकि कुचलने वालों के हाथ भी तुम से महक जायें।
(765) जिसे पसन्द करते हो उसे हासिल कर लो या फिर जो हासिल है उसे पसन्द कर लो।
(766) अगर कोई आप को याद नहीं करता तो कोई बात नहीं असल चीज़ तो यह है कि वह आप को फरामोश न कर दे।
(767) बाज़ार की मज्लिसें शैतानों की जगहें और फितनों के तीर हैं उन से दूर रहो।
(768) एह़सान का बदला उतारने की ताक़त न हो तो ज़बान से शुकरिया अदा करो।
(769) शराफत माल और नसब से नहीं बल्कि अक़्ल व अदब और तक़्वा व परहेज़गारी से है।
(770) वह गुनाह सब गुनाहों से सख़्त तर है जो करने वाले के नज़्दीक मअ़मूली है।
(771) जिस ने अपने हर काम को अच्छा समझा,उस की अ़क़्ल में लाज़्मी ख़लल है।
(772) दिल का सुकून ख़्वाहिशात की तक्मील में नहीं बल्कि ख़्वाहिशात को रोकने में पिन्हां है।
(773) इन्सान को दरया की तरह सख़ी,और सूरज की त़रह़ शफीक़ और ज़मीन की त़रह नरम होना चाहिए।
(774) कितना अच्छा होता कि हम नेक बन ने की भी वैसे ही कोशिश करें जैसी खूबसूरत बन ने के लिए करते हैं।

(775) काम से ग़ल्ती, ग़ल्ती से तजरबा,तजरबे से अक़ल,अक़ल से ख़्याल,और ख़्याल से नई नई चीज़ें हासिल होती हैं।
(776) अच्छे एख़लाक़ को पर्दे से बाहर निकालो और बुरे एख़लाक़ को पर्दे में रखो।
(777) जिस के दिल में एहसास नहीं वह इस अन्धेरे ग़ार की तरह है जो सूरज की किरनों से महरुम रहता है।
(778) बद ख़सलत वह है जो लोगों की बुराईयां ज़ाहिर करे और नेकियां छुपाओ।
(779) अगर कोई शख़्स नेक काम करे तो सिर्फ घर वालों को मालूम होता है,मगर बुरे काम दूर दराज़ तक पहोंच जाते हैं।
(780) अगर तन्दुरुस्ती चाहते हो तो नेक बनो,नेक बनना चाहते हो तो दाना बनो,दाना बनना चाहते हो तो इस्लाम का मुतालआ़ करो,और ख़ौफे ख़ुदा एख्तेयार करो क्यों कि अल्लसह का खौफ ही दानाई की बुनयाद है।
(781) पेशा इन्सान को ज़लील नहीं करता बल्कि इन्सान पेशे को ज़लील करता है।
(782) शकिस्ता क़ब्रों पर ग़ौर करो कि कैसे कैसे लोगों की मिट्टी ख़राब हो रही है।
(783) अगर तुम गनाह पर आमादा हो तो ऐसी जगह तेलाश करो जहां खुदा न हो
(784) फ़ुज़ूल उम्मीदों पर भरोसा करने से बचे रहो कि यह अहमक़ों का सरमाया है।
(785) ज़ुल्म की रात ख़्वाह कितनी ही लम्बी क्यों न हो सवेरा ज़रुर होता है।
(786) आदमी अच्छी किताबों के मुतालआ़ से बेदार होता है,मुकालमा से तमीज़ पैदा होती है और लिखने से सहीहुल मिज़ाज बनता है।
(787) पहले अक़ल व इल्म से लियाक़त पैदा की जाए कि खुबियों और बुराइयों में बारीक बीनी से फर्क़ मालूम कर के सिर्फ नेकियों पर अ़मल किया जाए।
(788) दिल को क़ाबू में रखो और एख्तेयार होने के बावजूद नाजाइज़ ख़्वाहिशात पर अ़मल न करना ही असल मर्दान्गी है।
(789) क़दम,क़सम,क़लम, हमेशा सोच समझ कर उठाओ।
(790) अलफाज़ सोच समझ कर इस्तेमाल करो क्यों कि आप के अल्फाज़ किसी की ज़िन्दगी का अन्दाज़ बदल सकता है।
(791) किसी के साथ इतना बुरा न करो कि उस के साथ अच्छा करने की ख़्वाहिश पर अ़मल न कर सको।
(792) फूलों की त़रह़ मुस्कराओ कि फूल मुस्कुराते हुए अच्छे लगते हैं।
(793) ख़ुश कलामी एक ऐसा फूल है जो कभी नहीं मुरझाता।
(794) दुनया की सब से बड़ी ग़रीबी बे अ़क़्ली है।
(795) शक एक ऐसा कांटा है जिस का ज़ख़्म बराहे रास्त दिल पर लगता है और जिस का इलसज मुम्किन नहीं।
(796) बेहतरीन आंसू वह है जो अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर गुनाहों की बख़्शिश के लिए बहायें जायें।
(797) गाली का जवाब न दो क्यों कि कबूतर कव्वे की बूली नहीं जानता।
(798) ज़िन्दगी बग़ैर मेह़नत और बग़ैर अ़क़ल के मुसीबतों और परेशानियों का पेश ख़ीमा है।

(799) इज़्ज़त एक ऐसा कोरा काग़ज़ है जिस पर एक मरतबा तोहमत की सियाही लग जाए तो वह कभी भी साफ नहीं हो सकता।
(800) हौसला एक ऐसी ताक़त है जो सख़्त चट्टानों को भी तोड़ सकती है।
(801) ज़िन्दगी मुख़्तलिफ रंगों पर मुश्तमिल होती है अगर एक रंग भी कम हो जाए तो ज़िन्दगी का मन्ज़र ही बदल जाए।
(802) ज़िन्दगी एक अमानत है और उसे अच्छे तरीक़े से वापस करो,गुनाहों के दलदल में फंस कर उसे बर्बाद न करो।
(803) यह दुनया मकाफाते अ़मल का नाम है आज किसी की राह में तुम पत्थर रखोगे तो आने वाला वक़्त तुम्हारी राह में पहाड़ बन जायेगा।
(804) ख़ामोशी एक ऐसे पर्दे का नाम है जिस के पीछे लियाक़त भी हो सकती है और हमाक़त भी हो सकती है।
(805) वह बात अकसर अनमोल होती है जिस में अल्फाज़ कम और मअना ज़्यादा हों।
(806) परेशानी हालात की वजह से नहीं बल्कि ख़्यालात की वजह से पैदा होती है।
(807) पीपल के पत्तों जैसा न बनो जो वक़्त आने पर सूख कर गिर जाते हैं बनो तो मेंहदी के पत्तों की तरह जो खुद पिस कर भी दूसरों की ज़िन्दगी में रंग भर देते हैं।
(808) असल कमाल,इल्म और अ़मल को जमा करने में है।
(809) औ़रतों के साथ ज़्यादा बात चीत करने और उन की हम नशीनी एख़्तेयार करने से बचो क्यों कि यह दिल कि मुर्दा होने का सबब है।
(810) शैतान इन्सान के बदन में खून की तरह गरदिश करता है इस लिए उस के गरदिशी रास्तों को भूक की मदद से बन्द करो।
(811) जिस इल्म से दिल में हमदर्दी,सोज़,रिक़्क़त,रंगीनी,व ताबानी पैदा न हो उस का मुतालबा बे कार है।
(812) दुनया में ज़िन्दगी की सांसें बहुत कम हैं और क़ब्र की ज़िन्दगी बहुत तवील है।
(813) सांस एक ख़ज़ाने के मानिन्द है,तुम्हारा कोई सांस बेकार न जाये, वरना क़्यामत के दिन तुम्हें अपना ख़ज़ाना खाली देख कर नदामत होगी।
(814) अपने कामों की बुनयाद क़हर व ग़ज़ब के बजाये मुहब्बत व आश्ती पर रखो।
(815) अच्छे अख़लाक़ और शीरीं कलाम वाले से खुद ब खुद महब्बत हो जाती है।
(816) मातहतों पर कम जफा करो हो सकता है कल वह मालिक हो और तुम मा तहत।
(817) जिस शख़्स को दूसरों की अ़ैब जोई करते पाओ उसे अपने दोस्तों के हलक़े से खारिज करदो।
(818) हुस्ने सुलूक यह है कि अगर कोई तुम से तअ़ल्लुक़ ख़तम कर दे,तक्लीफ पहोंचाये फिर भी तुम उस के साथ नेक सुलूक करो।
(819) इस बात से हमेशा डरते रहो कि खात्मा बुरा न हो,खात्मे की बुराई दो तरह की होती है (1)एक तो यह कि मआ़ज़ल्लाह ईमान ही सलब हो जाये (2) और दूसरे यह कि दुनया के ख़्याल और मुहब्बत में मौत आये।
(820) अपना अख़लाक़ संवारो आप का अख़लाक़ देख कर लोग तुम्हारे दोस्त बनते जायेंगे।

(821) हर इन्सान अच्छा नहीं होता और हर इन्सान बुरा भी नहीं होता बल्कि हमें खुद अपने आप को बदलना चाहिए।
(822) मुस्कराहट रुह की ग़िज़ा है।
(823) कुफर के बाद सब से बड़ा गुनाह किसी मुसलमान भाई की दिल शकनी है।
(824) मुहब्बत और अ़दावत पोशीदा नहीं रहती है।
(825) यह ज़रुरी नहीं कि जो खूबसूरत हो वह नेक सीरत भी हो, काम की चीज़ अन्दर होती है बाहर नहीं।
(826) आ़दाम मुख़्तलिफ जज़्बात व एह़सासात से तर्तीब पाती हैं यही वजह है कि जब हम उन्हें तर्क करने का इरादा करते हैं तो अक्सर नाकाम रहते हैं।
(827) किसी काम का बेहतरीन आग़ाज़ उस की निस्फ कामयाबी होती है,बग़ैर मक़सद के पायदार ज़िन्दगी नहीं गुज़रती,सो आग़ाज़ बेहतर और मक़सद बेहतरीन होना चाहिए।
(828) हमेशा हक़ में आगे बढ़ते जाओ यह न देखो कि आगे बुलन्दी है या पस्ती,कहीं तुम कमज़ोर न पड़ जाओ।
(829) ज़िन्दगी एक ऐसी ट्रेन है जो हमेशा स्टेशन पर रुकती है जहां हम उतरना नहीं चाहते मगर फिर भी हमें उतना पड़ता है।
(830) इल्म तन्हाई में मानिस,परदेस में रफीक़,ख़लवत में नदीम,दोसतों में ज़ीनत,और दुशमनों में बेहतरीन हथयार है।
(831) ख़न्दए पेशानी से पेश आना सब से बड़ी नेकी है।
(832) इन्सान की बुज़रुगी कम गुफ्तारी में और फज़ीलत तहम्मुल व बरदाश्त का मुज़ाहिरा करने में है।
(833) अदब बेहतरीन कमालात है और ख़ैरात अफ्ज़ल इबादात में से है।
(834) इज़्तेराब बे सबब नहीं होता बल्कि यह भूला हुआ सबक़,छोड़ी हुई मन्ज़िल और नज़र अन्दाज़ किये हुए फराइज़ याद दिलाता है।
(835) बाज़ औक़ात सच का बयान बे रब्त होने की वजह से बे मअना हो कर अपना असल मफहूम भी खो देता है।
(836) अमन की फाख़्ता वहीं तरक़्क़ी है जहां सुलह़ व आश्ती की धूप है।
(837) सुन लो जन्नत ख़िलाफे नफ्स काम करने से हासिल होगी और दोज़ख़ में लोग शहवात की पैरवी की वजह से जायेंगे।
(838) ज़िन्दगी एक सफर है इन्सान को पता होना चाहिए कि इस ख़तरनाक और ज़रुरी सफर का तौशा सिर्फ इबादत है।
(839) खुदाए तआ़ला ने जिस का सीना इस्लाम के लिए खोल दिया हो उस में ख़ुदा का एक नूर पैदा हो जाता है।
(840) जब बन्दे के दिल में ख़ुदाए तआ़ला का नूर दाख़िल हो जाता है तो दिल में वुस्अ़त पैदा हो जाती है।
(841) मौत कब आ जाये उस का कोई भरोसा नहीं क्यों कि ज़िन्दगी बहुत मुख़्तसर है तो जो शख़्स उस थोड़े से वक़्त में ज़ादे आख़िरत तय्यार करने में कामयाब हो गया समझो वह निजात पा गया और हमेशा की सआ़दत उस को मिल गई।

(842) दिल में अल्लाह का नूर पैदा होने के तीन अस्बाब हैं। (1) फानी दुनया से कनारा कशी (2) आख़िरत की तरफ रुजू (3)मौत की तय्यारी ।
(843) जो बन्दा अल्लाह तआ़ला की ख़िदमत व त़ाअ़त करेगा व आख़िरत में उसे ग़ैर फानी सिला और बदला इनायत फरमाएगा और जो नाफरमानी और शर कशी करेगा तो उसे दाइमी अ़ज़ाब में मुब्तेला कर देगा।
(844)इबादत की त़रफ तवज्जोह करने से पहले लाज़मी है कि सच्ची तौबा कर लें ताकि गुनाहों की नजासत से पाक हो जायें ।
(845) बन्दा जब खुलूसे दिल से इबादत की त़रफ राग़िब होता है तो चारों त़रफ से दुनयवी मसाइब व तकालीफ उठ खड़ी होती है।
(846) ख़्यालात व तफक्कुरात के हुजूम के वक़्त अपने मुआमिलात को रब के ह़वाले कर दो।
(847) बन्दे पर अपने रब की बन्दगी लाज़िम है तो उसे इल्म और इबादत को ही सब से अ़ज़मत वाली चीज़ तसव्वुर करना चाहिए क्यों कि मख़लूक़ की पैदाईश से मक़सूद यही दो चीज़ें हैं।
(848) इबादत से इल्म अफ्ज़ल है लेकिन इल्म के साथ साथ इबादत भी ज़रुरी है बग़ैर इबादत इल्म का कोई फाइदा नहीं,क्यों कि इल्म दरख़्त के मानिन्द है और इबादत फल की त़रह़ और दरख़्त की क़दर फल से ही होती है।
(849) इल्म को इस तरह हासिल करो कि इबादत को नुक़सान न दे और इबादत इस त़रह़ करो कि इल्म को नुक़सान न हो।
(850) ज़ाहेरी इबादात व त़ाअ़ात की क़बूलियत का दारो मदार बातिनी अख़लाक़ पर है जो दिल से तअ़ल्लुक़ रखते हैं।
(851) अगर बातिन ह़सद,रया,और तकब्बुर वग़ैरह से पाक हो तो ज़ाहिरी भी दुरुस्त होते हैं।
(852) अगर दिल में अख़लास होगा तो ज़ाहेरी अ़मल भी ठीक होगा और बातिन में रया हो तो ज़ाहेरी अ़मल भी ना दुरुस्त होगा।
(853) इल्म के बग़ैर अ़मल करने वाले आमाल बसा औक़ात बजाए सवाब के बाइसे अ़ज़ाब बन जाते हैं ।
(854) इल्म सआ़दत मन्दों को नसीब होता है और शक़ी (बद बख़्त) लोग उस नेअ़मत से महरुम रहते हैं।
(855) बे इल्म की महरुमी यह है कि उस ने इल्म तो सीखा नहीं होता,खाली इबादत की मुशक़्क़त और हिफ्फत उठाता है तो ऐसी इबादत से सिवाए जिस्मानी मुशक़्क़त के कुछ सवाब नहीं मिलता।
(856) जाहिल को खुदाए तआ़ला की मअ़रिफत नहीं होती,उस के दिल में अल्लाह का ख़ौफ नहीं पैदा होता और न ही ऐसा सह़ी मअ़नों में रब तबारक व तआ़ला की तअ़ज़ीम बजा ला सकता है।
(857) सि शख़्स पर खुदाए तआ़ला का एह़सान होता उसे ही दीनी उलूम का मुअल्लिम बन ने का एज़ाज़ हासिल होता है।
(858) इल्म हासिल करते वक़्त सब से ज़्यादा खुलूस को मद्दे नज़र रखना चाहिए।

(859) जो शख़्स इस लिए इल्म हासिल करे ताकि उल्मा के सामने फखर करे,या बे वकूफों से झगड़े,या लोगों की तवज्जोह अपनी तरफ फेरे तो ऐसे शख़्स को अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग में डालेगा।
(860) ज़िन्दगी में कामयाबी का राज़ अज़्म व हौसले पर है न कि अक़्ल व दानिश पर।
(861) तारीख़ एक तरह ग्रामोफोन है जिस में क़ौमों की सदाएं महफूज़ हैं।
(862) बुलन्द हौसला,आली फितरत,सख़ावत,और अपनी रिवायात व कुव्वत पर जाईज़ फख्र ऐसी बातें हैं जो शख्सिय्यत के एहसास को मुस्तहकम करती है।
(863) किसी मुआशेरे में मज़हब का सब से बड़ा अमीन व मुहाफिज़ औरत होती है।
(864) जिस क़ौम को बर्बाद करना हो उस क़ौम की लड़कियों औरतों को बे पर्दा कर दो।
(865)अपनी हुदूद को पहचानिए और अपनी सलाहियतों को परखये फिर ज़िन्दगी में कामयाबी यक़ीनी है।
(865) कभी कभी थोड़ी ग़लत फहमी और ग़लत रिशतों में दराड़ डालती है इस लिए यह ग़लत फहमी दूर करना ज़रुरी है क्यों कि दोस्ती और दिल के रिशते कभी नहीं टूटा करते ।
(866) ऐसे फाइदे से दर गुज़र करो जो दूसरों के नुक़सान का बाइस बने।
(867) मौत को याद रखना नफ्स की तमाम बीमारियों का इलाज है।
(868) इन्सान जो कुछ होता है उस के इलावह कुछ भी नहीं हो सकता है लेकिन लेकिन फितरतन अपने इलावह कुछ और होना चाहिए।
(869) तरक़्क़ी का ज़ीना चढ़ते हुए लोगों से अच्छा सुलूक करो नीचे उतरते हुए तुम्हें उस की ज़रुरत पड़ेगी।
(870) जो लोग उंची जगह खड़े होते हैं उन्हें गिरवाने के लिए तुन्द हवाएं चलती है,अगर वह गिर पड़ें तो उन का जिस्म करचियों की तरह बिखर जाता है।
(871) जो जाने वालों से इबरत नहीं हासिल करता वह आने वालों के लिए इबरत बन जाता है।
(872) दिल पर ज़्यादा मुसीबतें आंखों की वजह से आती है।
(873) ज़ेवरे अदब से आरास्ता बच्चा वालिदैन की खुश सलीक़गी का इश्तिहार है।
(874) वह इन्सान कामयाब होता है जिस ने बलाओं की तारीकियों में उम्मीद का चिराग़ रोशन रखा हो।
(875) आफियत इस में नहीं कि हम मअ़लूम करें कि कश्ती में सूराख़ कौन कर रहा है आफियत इस में है कि कश्ती कनारे लगे।
(876)खुदा जिस क़ौम की तबाही चाहता है उस की क़्यादत अय्याश और ओबाश लोगों के सुपुर्द कर देता है।
(877) जब कोई अपनी बद क़िस्मती का रोना रोए तो उसे यह मशवरा दो कि वह मेहनत के नुस्ख़े को आज़माए।
(878) ज़बान को शिकायतों से रोको खुशी व शादमानी की ज़िन्दगी हासिल होगी।

(879) अस्राफ (फुज़ूल खर्ची)इस का भी नाम है कि जिस चीज़ को इन्सान की त़बीअ़त चाहे खाए।
(880) तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत को हक़ जानता है फिर भी उस पर हंसता है।
(880) खुश ख़लक़ी और खामोशी पीठ पर हलकी है और मीज़ान पर भारी है।
(881) जिस मुआ़शरे में सच को ख़तरे की अ़लामत बनादिया जाए वहां आस्मान सरों से खींच लिया जाता है।
(882) अगर फिकर को लोगों की पेशानी पर लिखी होतीं तो वह लोग जो दूसरों पर शक करते हैं उन पर रह़म खाते।
(883) खूब सूरती की तिलाश में अगर हम सारी दुनया की खाक छान लें,अगर वह हमारे दिल में नहीं तो हम कहीं भी खूबसूरती नहीं पासकते।
(884) रिश्ते जब अज़िय्यत के सिवा कुछ न दे सकें तो उन से कनारहकशी ही बेहतर है ख़्वाह वक़्ती ही सही।
(885) अपनी त़ाक़त से ज़्यादा अपने उपर बोझ न डालो,ऐसा न हो कि हिम्मत हार बैठो।
(886) अपनी अ़क़ल को नाक़िस समझते रहो,अपनी अक़ल पर भरोसा करने ग़ल्ती सरज़द हो जाती है।
(887) मुहब्ब्त करने वाले शीशों के घरों में रहते हैं जहां अन्दर से तो कुछ नज़र नहीं आता मगर बाहर वाले अन्दर सब देख लेते हैं।
(888) अत़ाअ़त सिर्फ उस की करो जिस से बड़ा कोई नहीं।
(889) हुकूमत अपने ह़वास पर करो ताकि इन्सानी अ़ज़्मत नसीब हो ।
(890) ऐसा क़दम उठाओ जो आने वाले कल में तुम्हारे लिए दीवार बन जाये।
(891) मां की क़दर करो,क्यों कि यह अल्लाह तआ़ला का इन्सान के लिए अन्मोल तोह़फा है और ज़िन्दगी सिर्फ एक बार मिलती है।
(892) इस बात पर कभी ग़म न करो कि तुम ग़रीब हो क्यों कि फूल भी तो कांटों के साथ ज़िन्दा हैं।
(893) कामयाबी दूर अन्देशी पर मबनी है और दूर अन्देशी दानिश मन्दी से काम लेने पर मुन्ह़सर है और दानिश मन्दी भेदों की हिफाज़त से वाबस्ता है।
(894) दरगुज़र करने में उस का दरजा बुलन्द है जो सज़ा देने में सब से ज़्यादा कुदरत रखता है।
(895) अ़क़ल मन्द चुप होता है तो खुदा की कुदरत का मुज़ाहिरा करता है,बोलता है तो खुदा को याद करता है और देखता है तो इबरत हासिल करता है।
(896) सब्र मसीबत के मुताबिक़ मिलता है जिस ने अपनी मुसीबत के वक़्त ज़ानू पीटा उस का ज़ब्त़ हो गया।
(897)जो शख़्स अपने आप से राज़ी रहता है उस पर नाराज़ होने वाले लोग बढ़ जाते हैं।

(898) जिस ने लालच को अपना शिआ़र बनाया उस ने अपनी बद अअ़माली का पर्दा खोला वह अपनी खुशी से ज़लील हुआ और जिस ने ज़बान को अपना फरमां बरदार बना लिया उस ने दिल कमज़ोर कर दिया।
(899) बुख़्ल आ़र है और बुज़दिली अ़ैब,और नादरी ज़हीन आदमी को गूंगा बना देती है कि वह अपनी हुज्जत पेश नहीं कर सकता और मफ्लिस आदमी अपने शहर में परदेसी होता है।
(900) बेचारगी एक आफत है और सब्र शुजाअत है ज़ोहद दौलत है और परहेज़गारी ढाल है।
(901) बेहतरीन हमनशीन रिज़ा है, और इल्म एक बा इज़्ज़त वरासत है,आदाब नए नवेले जोड़े हैं और सोच एक साफ आइना है।
(902) जब दुनया किसी की त़रफ रुख करती है तो दूसरों की खूबियां उसे उधार दे देती हैं और जब सिी से पीठ फेरती हैं तो उस की अपनी खूबियां भी उस से छीन लेती हैं।
(903) लोगों से ऐसा मोल जोल रखो कि अगर तुम मर जाओ तो वह तुम पर रोयें,और अगर जीते रहो तो तुम्हारी त़रफ मायल हो जायें।
(904) मीज़ाने अ़मल को ख़ैरात और सदक़ात के वज़न से भारी करो।
(905) जो तुम्हारे साथ सख़्ती करे तुम उस के साथ नर्मी करो,तुम्हारी नर्मी उस की सख़्ती को आख़िर कार नरम कर देगी।
(906) जब तुम्हारा कोई दुशमन तुम्हारे क़ाबू में आ जाए तो उस के साथ एह़सान और नेकी से पेश आओ।
(907) किसी दोस्त की हक़ तल्फी उस की दोस्ती के ए़तेबार से न करो क्यों कि जिस दोस्त की हक़ तल्फी की जायेगी वह तुम्हारा दोस्त न रहेगा।
(908) अपने दोस्त को दोस्ताना और ख़ैर ख़्वाहाना नसीह़त करने से दरेग़ न करो, ख़्वाह तुम्हारी नसीहत उस को बुरी लगे या अच्छी,तुम को जो कहना हो कह दो मगर उस के मुंह पर, गुस्सा पी जाओ और ज़ब्त से काम लो।
(909) अ़क़ल मन्द आदमी के दिमाग़ में भी एक ऐसा गोशा होता है जिस में बे वक़ूफी रहती है।
(910) जो कुछ तुम नेकी के रास्ते में ख़र्च करोगे वह तुम्हारा तौशए आख़िरत बन जायेगा और जो कुछ जमा करोगे तुम्हारे बाद कोई और उस से फायदा उठा लेगा।
(911) गुनाहों की नहूसत बन्दे को इबादात बजा लाने से महरुम कर देती है और उस पर ज़िल्लत व रुसवाई मुसल्लत कर देती है।
(912) गुनाहों का बोझ नेकियों के सुकून को पैदा नहीं होने देता और न ही ताआ़त में निशात व खुशी एह़सास होने देता है।
(913) तौबा में ताखीर करना सख़्त नुक़सान देह है क्यों कि इब्तेदाअन दिल में क़सावत पैदा होती है और फिर रफ्ता रफ्ता इन्सान कुफर व गुमराही की त़रफ बढ़ने लगता है।

(914) अगर तुम तौबा में जल्दी करो तो उम्मीद है कि अ़न्क़रीब गुनाहों पर असरार करने का मर्ज़ तुम्हारे दिल से दूर हो जाये और गुनाहों की नहूसत का बोझ तुम्हारी गरदन से उतर जाये।
(915) बे शक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है और दिल की सियाही की अ़लामत यह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती और फरमांबरदारी व त़ाअ़त के लिए मौक़अ़ नहीं मिलता ।
(916) अगर तुम अपने अन्दर बुज़रुगों की सीरत पैदा करने के आरज़ू मन्द हो तो ज़माने के मसाइब व हवादिस बरदाश्त कर के अपने नर्मी और तवाज़ोअ़ को मज़बूत करो।
(917) यह दुनया दर हक़ीक़त मैले कुचैले मुरदार की मानिन्द है, तुम देखते नहीं कि उस के लज़ीज़ खाने थोड़ी देर में बदबूदार गन्दगी बन जाते हैं और अन्जाम कार उस ज़ैब व ज़ीनत वाली चीज़ें ख़राब,पुज़ मुर्दा और फना हो जाती है।
(918) इस नाज़ुक दौर में अपने ज़बान की हिफाज़त करो, अपने मकान को मस्तूर रखो, अपने दिल की इस्लाह़ करो,नेक काम इख्तियार करो, और बुराई से इज्तेनाब करो,दोनों जहां में सर खुरुई नसीब होगी।
(919) हर तक्लीफ के वक़्त नफ्स में सन्जीदगी और कुव्वते बरदाश्त पैदा करो, दिल को साबिर बनाओ अगर चे वह उस में रुकावट पैदा करे।
(920) तुम्हारी ज़बान मुंह में बन्द रहनी चाहिए और तुम्हारी आंखें लगाम में रहनी चाहिए, तुम्हारा मुआ़मला लोगों से छुपा हुआ और उस का इल्म सिर्फ खुदाए तआ़ला को हो।
(921) शैतान के लिए खुदाए तआ़ला का ज़िकर इतना तक्लीफ दह है जिस त़रह इन्सान के लिए खारिश।
(922) इबादत में तरक़्क़ी और कामयाबी हासिल करने के लिए शैतान से जंग और उस पर सख़्ती करना भी लाज़िम और ज़रुरी है।
(923) नफ्स घर का चोर है और जब चोर घर में छुपा हो तो उस से महफूज़ रहना बहुत मुश्किल होता है और बहुत ज़्यादा नुक़सान पहोंचाता है।
(924) अगर तुम त़क़वा और सब्र इख़्तियार करोगे तो तुम्हें मुखालिफों के मकर व फरेब कुछ नुक़सान न दे सकेंगे ।
(925) जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से डरता है वही नफा वाली शै हासिल करता है।
(926) अफरात व तफरीत़ से बच कर दरमयानी राह चलने की कोशिश करो और शुब्हे वाली जानिब से दूर रहो।
(927) तक़वा के माना यह हैं कि अल्लाह त़आ़ला की ऐसी अ़त़ाअ़त करना कि फिर नाफरमानी न हो और उस की याद का ऐसा नक़्शा दिल में जमाना कि फिर वह भुलाए ही न हो और उस की इस त़रह़ शुक्र गुज़ारी करना कि ना शुकरी का सुदूर ही नहो।
(928) तक़वा के तीन मरातिब हैं। (1) शिर्क से बचना (2) बिदअ़त से बचना (3) गुनाहों से बचना ।

(929) अगर तुम अपनी आंख को यूं ही खुला छोड़ दोगे तो रंगा रंग नज़ारे एक रोज़ तुम्हें सख़्त मुश़क्क़त और मुसीबत में डाल देंगे।
(930) अपने कान को बुरी बातें सुन ने से रोके रखो , जिस त़रह़ ज़बान को बुरी गुफ्तगू से रोकते हो।
(931) ज़बान घात में छुपे हुए शेर की मानिन्द है जो मौक़ा पाने पर ग़ारत गरी करता है इस लिए उसे खामोशी की लगाम देकर लग़्विय्यात से बन्द रखो इस तरह़ तुम बहुम सारी आफत से बच जाओगे।
(932) दिल एक बादशाह के मानिन्द है जिस की अत़ाअ़त की जाती है और बाक़ी अअ़जा रिआ़या की त़रह़ है कि उस की पैरवी करते हैं तो अगर सरदार दुरुस्त हो तो उस के ताबेअ़ भी दुरुस्त होते हैं । इसी त़रह़ अगर बादशाह दुरुस्त हो तो रिआ़या भी दुरुस्त और ठीक रहती है।
(933) फसादे क़ल्ब का बाइस यह चार चीज़े हैं।(1)दुनया की उम्मीदें(2)इबादात में जल्द बाज़ी (3)ह़सद (4)तकब्बुर।।
(934) तह़रीर एक खामोश आवाज़ है और क़लम हाथ की ज़बान,इल्म जवानी का ज़ेवर और बुढ़ापे का सहारा है।
(935) लम्बी उम्मीदें और बे जा ख़्वाहिशात नेकी और अत़ाअ़त के रास्ते में रुकावट हैं नीज़ हर फितने और शर का बाइस है।
(936) दुनया की उम्मीदें इन्सान को हर नेक काम से काट देती हैं और लालच हर ह़क़ से इन्सान को रोक देती है और सब्र हर भलाई की त़रफ रह नुमाई करता है और नफ्से अम्मारह हर शर और बुराई की तरफ बुलाता है।
(937) ह़सद से दिल अन्धा हो जाता है यहां तक कि अल्लाह तआ़ला के किसी हुक्म को समझने की सलाहियत ख़तम हो जाती है।
(938) अगर जानना चाहते हो कि तुम से तुम्हारा रब कितनी मुहब्बत करता है तो उस के क़रीब आके देखो तुम्हें अन्दाज़ा हो जायेगा।
(939) दुनया की रंगीनियों में खो जाने वाला शख़्स हमेंशा बुज़दिल और कमज़ोर होता है क्यों कि उसे खुदा का नहीं बल्कि लोगों का डर होता है।
(940) दुनया दरया है,ईमान कश्ती है,इबादत मल्लाह़ और आख़िरत कनारा है।
(941) खौफ से मुहब्बत दुरुस्त होती है और अदब से रिआ़यत मुस्तह़क होती है।
(942) त़न्ज़ ऐ़नक की मानिन्द है जिस के ज़रियह अपने चेहरे के सिवा हर चीज़ नज़र आती है ।
(943) दुनया के साथ इतना नरम न हो कि वह तुम्हें निचोड़ कर रख दे और न ही इतना खुश्क बन जाओ कि वह तुम्हें निचोड़ कर रख दे।
(944) अगर दुशमन पर कुदरत मिल जाये तो उस कुदरत का शुक्र अदा करो कि उसे मुआफ कर दो।
(945) तवाज़ोअ़ और नरम रवी ही इन्सान को बुलन्दी पर पहोंचाती है,जो शख़्स अपनी बड़ाई हांकता है वह कभी अ़ज़ीम नहीं बन सकता।
(946) अपने आप को बे जा लालच और तमअ़ से बचाओ क्यों कि वह तंग दस्ती और मोह़ताजी का पेश खीमा है।

(947) जो शख़्स अपनी आंख की हिफाज़त नहीं करता उस का दिल बे क़ीमत होजाता है।
(948) ज़्यादा खाने से अअ़ज़ा में फितना पैदा होता है फसाद बरपा करने और बे होदा कामों की त़रफ रग्बत पैदा होती है क्यों कि जब इन्सान खुब पेट भर कर खाता है तो उस के जिस्म में तकब्बुर और आंखों में बद नज़री की ख़्वाहिश पैदा होती है।
(949) इबादत एक ऐसा फन है जिस के सीखने की जगह तन्हाई और उस का हथियार भूक है।
(950) कीना परवर दीन दार नहीं होता,लोगों का ऐ़ब निकालने वाला इबादत गुज़ार नहीं बन सकता,चुगुलखोर को अमन नसीब नहीं होता और हासिद शख़्स नुसरते खुदा वन्दी से महरुम रहता है
(951) ह़सद एक ऐसी बीमारी है जो इबादात के अजर व सवाब को तबाह कर देती है शर और मुसीबत की तुखुम रेज़ी करती है आराम और सुकून को खतम कर देती है और दीन की समझ से महरुम कर देती है।
(952) बुर्द बार शख़्स अपने मक़ासिद को ब आसानी पालेता है जब कि जल्द बाज़ अकसर औक़ात फिसल कर गिर जाता है ।
(953) तकब्बुर एक ऐसी आफत है जो नेकी का नाम व निशान मिटा देती है।
(954) हर बीमारी की असल बद हज़्मी और हर इलाज की असल भूक और कम खाना है।
(955) दुनया एक ख़्वाब गाह की तरह है या ज़ायल और फना हो जाने वाले साए की त़रह़,और बे शक अ़क़्ल मन्द ऐसी ना पायदार शै से धोखा नहीं खाते।
(956) बुज़रुगों का हमेशा अदब करो क्यों कि बे अदबी एक एसा शजर(पेड़) है जिस का समर (फल)मरदूद होता है।
(957) जो दीन को बरबाद कर के दुनया संवारते हैं उन का न तो दीन रहता है और न ही दुनया संवर पाती है।
(958) अपने नफ्स की अ़य्यारियों से होशयार और उस की धोख बाज़ियों से बे खौफ न हो क्यों कि नफ्स की ख़बासत सत्तर शैतानों की ख़बासत से ज़्यादा है।
(959) ईमान की सलामती के बाद तक़्वा और परहेज़गारी ही असल जौहर और निजाते आखिरत का ज़रियअ़ है। इनसानों में मुत्तक़ी लोगों का दरजा ही सब से ज़्यादा है।
(960) त़ालिबे आख़िरत सख़्त आज़माया जाता है और उसे शदीद मेह़नत में मुब्तला किया जाता है जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के जितना क़रीब होगा इतना ही मसाइब भी दुनया में ज़्यादा दरपेश होंगे।
(961) सब्र एक कड़वी दवा है और एक ना खुशगवार शरबत,लेकिन निहायत बा बरकत और हर त़रह़ की मनफिअ़त का सबब और ज़रियअ़ है जो कि जुम्ला परेशानियों को दूर करता है।
(962) जो सब्र करता है उस को दुनया में गुनाहों और गुनाहों के बुरे नताइज से हिफाज़त नसीब हो जाती है और वह आखिरत में गुनाहों के वबाल से बच जाता है।
(963) सब्र के तुफैल इन्सान अल्लाह तआ़ला की त़रफ से करामत और इज़्ज़त का मुस्तह़क़ हो जाता है।

(964) रया कारी और दिखावे के मैल कुचैल से अअ़माल को पाक व साफ रखने का नाम इख़्लास है।
(965) अल्लाह तआ़ला रया कार को ना काम व ना मुराद करता है उस की कोशिश और मुशक़्क़त को बेकार कर देता है।
(966) हर मिले को उस की ज़िद से पहचाना जाता है तब तक साहबे इख़्लास,रया की बुराई से वाक़िफ न हो, इख़्लास की अच्छाई को कभी भी नहीं समझ सकता।
(967) ज़ाहिर व बातिन को हर क़िस्म के गुनाहों से दूर करना और तमाम अअ़ज़ाअ़ (अंग) से अल्लाह तआ़ला की अत़ाअ़त व फरमांबरदारी करने का नाम शुक्र है।
(968) जिस ने खुद को खुदाए तआ़ला के साथ वाबस्ता कर लिया व फितना व फसाद और शैतान के वसवसों से निजात पा गया और जिस्म में खुदाए तआ़ला को याद रखने की सलाहियत होती है वह कभी परेशान नहीं होता ।
(969) जो **शख़्स आमाल व अफआ़ल की दुरुस्तगी और इत्तेबाए सुन्नत का त़लब गार है उस के लिए बातिनी खुलूस का हुसूले बहुत ज़रुरी है।**
(970) मोमिन हर त़रह़ की ख़सलत पर पैदा किया जाता है लेकिन ख़्यानत और झूट पर पैदा नहीं किया जाता है।
(971) अल्लाह तआ़ला उस क़ौम की हालत नहीं बदलता जिस को खुद अपनी हालत बदलने का ख़्याल नहीं होता।
(972) कोई इतना अमीर नहीं होता कि वह अपना माज़ी ख़रीद सके और इतना ग़रीब नहीं होता कि वह अपना मुस्तक़बिल बदल सके,इस लिए ह़ाल को ग़नीमत जानो मुस्तक़बिल रोशन हो जाएगा।
(973) आंख
झुकती है तो ज़माने भर की ह़या अपने अन्दर समो लेती है।
लगती है तो संगलाख चट्टानों को भी हेच बना देती है।
उठती है तो रहगुज़ारों को भी गुलज़ार बना देती है।
खुलती है तो कायनात के राज़ों से पर्दों खोल देती है।
देखती है तो समन्दर की गहराईयों से मोती निकाल लेती है।
मुस्कराती है तो कायनात की तमाम मअ़सूमियत को जज़्ब कर लेती है।
सोती है तो सुहाने ख़्वाबों की आग़ोश में पहोंच जाती है।
बोलती है तो अहले ज़बान को भी अंगुश्ते बदन्दां कर देती है।
रोती है तो अर्शे मुअ़ल्ला को हिला देती है।
(974)खामोशी :
इबादत है बग़ैर मेहनत की ।हैबत है बग़ैर सल्तनत के ।
क़िला है बग़ैर दीवार के ।कामयाबी है बग़ैर हथियार के ।

आराम है किरामन कातिबीन का ।क़िला है मोमिनीन का।
शेवा है आजिज़ों का। दबदबा है हाकिमों का ।
ख़ज़ाना है हिक्मतों का । जवाब है जाहिलों का।

(975) ज़ाहिर मत कर

किसी का ऐ़ब ज़ाहिर मत कर ।दिल का भेद ज़ाहिर मत कर
अमानत की बात ज़ाहिर मत कर। पूरी ता़क़त ज़ाहिर मत कर
सफर करने की सम्त (दिशा) ज़ाहिर मत कर
अपनी तिजारत का फायदा या नुक़सान ज़ाहिर मत कर
ज़्यादा ज़रुरत ज़ाहिर मत कर।

(976) मत चला :

बड़ों के सामने ज़बान मत चला
बात करने में आंखें और हाथ मत चला
जान बूझ कर खोटा सिक्का मत चला
मुहल्लाह और बाज़ार में तेज़ सवारी मत चला
अपनी जानिब से कोई बुरी रस्म मत चला
दूसरों के दरमयान अपनी बात मत चला
कभी किसी को ग़लत रास्ता पर मत चला ।

(977) ज़रुर कर :

तब्लीग़ ज़रुर कर
जवानी में इबादत ज़रुर कर
मां बाप की ख़िदमत ज़रुर कर
दस्तर ख़्वान को वसीअ़ ज़रुर कर
सदक़ा और ख़ैरात ज़रुर कर
सच्चे दोस्त की तलाश ज़रुर कर
हर बड़े का अदब ज़रुर कर
इज़्ज़त हासिल करने की कोशिश। ज़रुर कर

(977) मत भूलः

अपनी मौत को मत भूल
खुदा को मत भूल

दूसरे को क़र्ज़ को मत भूल
अपने वअ़दे को मत भूल
मां बाप की वसिय्यत को मत भूल
ज़िन्दगी के सह़ी मक़सद को मत भूल
अ़ज़ीज़ व अ़क़ारिब को मत भूल
सिला रह़मी को मत भूल
(977) होता है
ज़्यादा क़स्में खाने वाला झूटा होता है
ज़्यादा बातें करने वाला बे वक़ूफ होता है
ज़्यादा हंसने वाला मुर्दा दिल होता है
(977)